RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 2 अंक 4 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

liverajsamand.com

हिन्दी मासिक पत्रिका

दिसम्बर 2018

पेज संख्या : 36 राजसमंद

जनता के सवालों पर
किरण माहेश्वरी ने
दिए जवाब

पढ़िए एक खास
साक्षात्कार

तेज हुई चुनावी कुर्सी रेस

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

LUMITEX
INNOVATIVE LIGHTS

Ground Floor, Kothari Tower
Opp. Silvr Spring Apartments
100 Ft. Road, Rajsmand (Raj.)
M. +91 8107 895 069
lumitexworld@gmail.com

- Havells & Crabtree Switches
- Havells Fan & Geyser
- Hanging Lights
- Wall Lighths
- Automation Based Light
- Table Lamps
- Mirror & Picture Lights
- Kids Lights
- Outdoor Lights
- Gate Lights & Bollard
- Commercial Lights

राजसमन्द में इनोवेटिव लाइट्स की एक बेहतरीन श्रृंखला

उचित मूल्य व उत्तम गुणवत्ता की लाइट्स, लेम्प, झूंमर, फेन सहित
कई प्रकार के आधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं।

स्ट्रीट लाईट,
फ्लड लाईट एवं
व्यावसायिक कार्यो में
उपयोग आने वाली
लाईट्स उचित मूल्य पर
उपलब्ध।

ग्राउंड फ्लोर, कोठारी टावर, सिल्वर स्प्रिंग अपार्टमेंट के सामने 100 फीट रोड, राजसमंद मो. 8107895069

सम्पादकीय

विवेक के साथ अवश्य मतदान करें

वर्तमान में राजस्थान में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। यह हमारे देश का सौभाग्य है और भारत की लोकतान्त्रिक प्रणाली की विश्वसनीयता है कि हमारा लोकतंत्र अभी तक निरंतर मजबूती के साथ आगे बढ़ता जा रहा है। भारत के पड़ौसी देशों में लोकतन्त्र अपना वाजिब स्वरूप ही खो चुका है।

अधिकतम मतदाता अपने मत को स्वविवेक से उपयुक्त उम्मीदवार को दे, तभी लोकतन्त्र का सही स्वरूप देखने को आता है। शत प्रतिशत मतदाता मतदान करने हेतु उपस्थिती देंगे, अभी यह दूर की कौड़ी ही अनुभव होती है। इसके पीछे कई कारण है। जैसे- मतदान के महत्त्व को न जानना, वोट के प्रति उदासीनता व नकारात्मक वातावरण। कम मतदान के लिए जिम्मेदार हम सभी हैं। हम सबको मिलकर सकारात्मक वातावरण के निर्माण की पहल करना जरूरी है। इससे ही मतदान के प्रति जागरूकता आएगी। एक जागरूक नागरिक को न केवल मतदान करना चाहिए अपितु मतदान कराने के लिए भी पहल करनी चाहिए। हमारे देश में चुनाव में भाग लेने वाले जन किसी न किसी दल का उम्मीदवार होता है, लेकिन निर्दलीय उम्मीदवार भी चुनाव के समय मतदाता के सम्मुख स्वयं को प्रस्तुत करता है। जीत का सेहरा उसी उम्मीदवार के बंधता है जो प्रभावी तरीके से मतदाता को अपने पक्ष में कर सकता है। हां, यह बात अच्छे से जान लेनी चाहिए कि हर निर्दलीय उम्मीदवार नहीं जीतता और सब के सब नहीं हार जाते। जिस दल का बोलबाला या लहर है, उसके उम्मीदवारों को जीत सहजता से मिल जाती है, लेकिन लहर में भी कई योग्य उम्मीदवार अपने प्रभावी व्यक्तित्व से एवं प्रबंधन से जीत को गले लगा ही देते हैं।

जीत कौन नहीं चाहता ? उसके लिए मतदाता के सम्मुख करिश्माई प्रदर्शन, उत्तेजित कर देने वाले भाषण और वक्तव्य सुनाए जाते हैं। स्टार प्रचारक आते हैं और विपक्षी की बखियों को उधेड़ा जाता है। शोर-शराबा, भीड़, उतेजना, चमत्कृत करा देने वाली प्रवृत्तियां आदि सब मतदाता को विमोहित करने लग जाते हैं। इसी चमत्कार के मध्य कहीं मतदाता खोता चला जाता है, जिससे वह अपनी रोज़मर्रा की जरूरतों को भुलाकर भीड़ का हिस्सा बनता चला जाता है। भीड़ के प्रवाह में वह अपने विवेक को सुला देता है और भीड़ के वेग में अपना मतदान कर आता है।

आज जरूरत इस बात की है कि मतदाता अपने विवेक से मतदान का उपयोग कर सके। उसे करना भी चाहिए। नोटा को लेकर जो नकारात्मक वातावरण कतिपय लोगों द्वारा बनाया जा रहा है, उसे भी रोकना चाहिए। मतदाता द्वारा नोटा को अनिर्णय की स्थिति में प्रयोग में लिया जाना चाहिए, न कि चुनाव के प्रति उदासीनता दिखाने के लिए। ईवीएम द्वारा मतदान एक विश्वसनीय प्रक्रिया है। लंबे समय तक चुनाव के प्रशिक्षणों से जुड़े रहने से मैं अपने अनुभव से यह कह सकता हूं कि इसके द्वारा पूर्ण गोपनीय और विश्वसनीय चुनावी प्रक्रिया सम्पन्न होती है। लेकिन पूर्व में इस पर भी संदेह किया गया, जो भी मतदाता को भ्रमित करने का ही एक प्रयास रहा होगा। यदि ऐसा नहीं होता तो ईवीएम चुनावों से अब तक अपनी भूमिका खो चुकी होती।

सोशल मीडिया के अधिकतम प्रयोग के कारण वाजिब और गैरवाजिब सूचनाएं मतदाताओं के पास पहुंचाई जाती हैं। हमें झूठी खबरों और अफवाहों से सजग रहना चाहिए। ये ही मतदाता को भ्रमित करने के मुख्य स्रोत होते हैं। मतदान बहुमूल्य है। इससे ही राज्य और देश की योजनाएं निर्धारित होती हैं। हमारे इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय मंच पर हमारे देश के सरोकार तय होकर स्थान निश्चित होता है। आज भी हम अभाव से रूबरू हो ही रहे हैं। क्योंकि मतदाता उदासीन है और भ्रम का शिकार हो रहा है। अस्तु, सकारात्मक वातावरण के साथ वाजिब मतदान सविवेक सम्पन्न होना चाहिए। सही और जनता के सहज जीवन के पक्षधरों को आगे बढ़ाना चाहिए।

अतिथि सम्पादक

त्रिलोकी मोहन पुरोहित
वरिष्ठ साहित्यकार व अकादमी निदेशक
सोफिया पब्लिक स्कूल, कांकरोली

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय
जयवर्द्धन
website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक	विजय शर्मा
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
विज्ञापन प्रबंधक	जितेन्द्र शर्मा
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)
वितरण सहयोगी	नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **चुनाव विश्लेषण :** तेज हुई कुर्सी रेस — पेज- 4
2. **साक्षात्कार :** मैं सिर्फ गीता के कर्म सिद्धांत पर विश्वास करती हूं — पेज - 11
3. **तीखी मिर्ची :** अटेंशन — पेज -15
4. **मेवाड़ी चौपाल :** विकास रा काम करें, वनेइज वोट देणो — पेज- 16
5. **विशेष पत्र :** एक पत्र यमराज के नाम — पेज - 17
6. **माटी का लाल :** मेवाड़ के जन नेता आचार्य निरंजननाथ — पेज - 20
7. **कहानी :** सबक — पेज - 23
8. **कविता व दोहे** — पेज - 24
9. **व्यंग्य :** बकरा — पेज - 27
10. **कहानी :** फैमिली कोर्ट — पेज - 30

तेज हुई कुर्सी रेस

राजसमंद. विधानसभा चुनाव को लेकर इस बार राजसमन्द सीट दोनों प्रमुख राजनीतिक दल भाजपा एवं कांग्रेस के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गई है। एक तरफ जहां भाजपा अपना यह मजबूत गढ़ बचाने के लिए एड़ी.चोटी का जोर लगा रही है तो दूसरी ओर लम्बे अर्से से वनवास काट रही कांग्रेस में सत्ता पाने की छटपटाहट साफ नजर आ रही है। यहां से लगातार दो बार चुनाव जीतने के बाद तीसरी बार बतौर यौद्धा चुनावी रण में उतरी भाजपा की कद्दावर नेता एवं केबिनेट मंत्री किरण माहेश्वरी अपने कार्यकाल में कराए गए विकास एवं जनता के दुख.दर्द में साथ खड़े रहने के दम पर जीत की हैट्रिक लगाने को बेताब है वहीं बीते डेढ़ दशक से सत्ता से दूर होने का दंश झेल रही कांग्रेस के पास अपनी उपलब्धि के नाम पर कुछ खास तो नहीं है और वह प्रतिद्वंदी की खामियां गिनाकर एवं भविष्य में कुछ कर गुजरने की दुहाई के साथ चुनावी नैया पार करने की जुगत कर रही है।

दरअसल बीते तीन चुनावों से इस सीट पर लगातार भाजपा मजबूती के साथ अपना कब्जा बनाए हुए है। वर्ष 2003 में कांग्रेस के खिलाफसत्ता विरोधी लहर में भाजपा ने रिकॉर्ड मतों के अंतर से जीत का परचम फहराया था और बंशीलाल खटीक विधायक बने। इसके बाद वर्ष 2008 के चुनावों में प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनने के बावजूद राजसमन्द सीट पर किरण माहेश्वरी ने कांग्रेस नेता एवं पीसीसी सदस्य हरिसिंह राठौड़ को शिकस्त दी। इसके बाद किरण ने वर्ष 2013 के चुनावी समर में कांग्रेस के हरिसिंह राठौड़ को ही फिर 30 हजार से अधिक मतों की बढ़त के साथ हराकर इस सीट पर भाजपा का किला खड़ा करने का श्रेय प्राप्त किया। किरण इससे भी पहले उदयपुर, राजसमन्द लोकसभा सीट से सांसद के रूप में इस क्षेत्र का प्रतिधित्व कर चुकी है। ऐसे में वे पिछले डेढ़ दशक से इस क्षेत्र में लगातार बतौर जनप्रतिनिधि सक्रिय है। इस बार फिर पार्टी ने उन्हें मैदान में उतारा है और वे पूरे दमखम के साथ डटी हुई है। माहेश्वरी अपने कार्यकाल में शहर देहात में आधारभूत सुविधाओं में विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण तथा जनहित में कराए विकास कार्यो के साथ ही निरन्तर अपने क्षेत्र में सक्रिय रहने एवं जनता के सुख दुख में भागीदारी जैसे मुद्दों को भुनाते हुए जीत पाने के भरसक प्रयास कर रही है। जानकारों के मुताबिक माहेश्वरी इस बात को लेकर भी आशान्वित नजर आती है कि बतौर जनप्रतिनिधि वे अपने क्षेत्र में पूर्ण सक्रिय रही और शहर से गांव ढाणी तक अपनी पहचान बनाई।

कांग्रेस ने राजसमन्द सीट को लेकर अपने इतिहास पर लगे हार के दाग धोने के लिए इस बार पूर्व जिला प्रमुख एवं पूर्व कांग्रेस जिलाध्यक्ष नारायणसिंह भाटी पर दांव लगाया है। कांग्रेस प्रत्याशी भाटी के सन्दर्भ में खास बात यह कि वे वर्ष 2008 से टिकट के लिए अपनी दावेदारी पेश कर रहे थे, लेकिन उन्हें अपने ही दिग्गज नेता डॉ. सीपी जोशी के विरोधी खेमे से ताल्लुक रखने का फलसफा भुगतना पड़ा।

इस बार पार्टी नेतृत्व ने जातिगत सहित हार जीत के विभिन्न समीकरण देखते हुए भाटी को मैदान में उतारा है। भाटी की उम्मीदवारी के बाद विभिन्न कारणों से वर्षों से लगभग आईसीयू में चल रही कांग्रेस मानों आईसीयू से बाहर आ गई। अब जीत के लिए सामने खड़ी चुनौती को पार पाने के लिए पार्टी पूरे दम के साथ जुटी है। लम्बे अर्से बाद अलग अलग गुटों के कांग्रेस नेता एक जाजम पर नजर आए हैं और फिर अपने कार्यकर्ताओं की फौज के साथ मैदान में कूद पड़े है। इन सबके बीच चूंकि इस सीट पर वर्ष 2003 के बाद पन्द्रह वर्षो से कांग्रेस सत्ता से पूरी तरह दूर है और इससे पूर्व कांग्रेस के विधायक रहे हैं। ऐसे में उन पुराने कार्यकालों में हुए काम मौजूदा परिस्थितियों में गौण है। ऐसे हालात में कांग्रेस के पास यह मुद्दा तो नहीं है, लेकिन वह लगातार भाजपा के विधायकों के कार्यकाल में रही खामियों को गिनाकर एवं नए वादों के सहारे अपनी वेतरणी पार लगाने की जुगत में है।

देखना यह होगा कि राजसमंद विधानसभा में इन 15 वर्षो के भाजपा कार्यकाल में कराए गए विकास कार्यों और कांग्रेस के नए वादों के बीच की टक्कर में किसे सफलता मिलती है।

जो जीता वो ही सिकन्दर भाजपा और कांग्रेस की प्रतिष्ठा लगी दांव पर

प्रदेश को मोहनलाल सुखाडिया और हीरालाल देवपुरा के रूप में दो- दो मुख्यमंत्री देने वाले शक्ति-भक्ति के प्रतीक राजसमन्द जिले का यह चुनाव आने वाले समय में राजस्थान की राजनीति की दशा और दिशा निर्धारण करने वाला है। दोनों ही प्रमुख दलों ने अपने अपने महारथियों को इस बार चुनावी समर में उतारा है। यहां की चारों विधानसभा क्षेत्र में कद्दावर नेता और मंत्री स्तर के प्रत्याशी आमने सामने है। राजसमन्द की जनता इस बार अपने मतो से किस का मस्तकाभिषेक करेगी, इस यक्ष प्रश्न का उत्तर 11 दिसम्बर 2018 को ही मिलेगा। जिस आक्रामक अन्दाज से भाजपा और कांग्रेस के प्रत्याशियों ने नामाकंन भर कर चुनावी समर का शंखनाद किया है। उससे तो यही लगता है कि कोई भी दल जीत के लिए हर स्तर पर प्रयास करेगा, जिसमें धनबल-भूजबल के साथ एक दूसरे पर घात प्रतिघात के साथ भीतरघात भी करेगा। दोनों ही प्रमुख दलो ने जिले में तीन तीन क्षत्रिय उम्मीदवार उतार कर

चुनावी जीत का आधार तुष्टिकरण और जातिवाद को बनाया है। अब यही बात दोनों को भीतरघात के खतरे से सता रही है कि जिले के बहुसंख्यक मतदाता उनके नाथद्वारा और राजसमन्द में तुरूप के इक्के को पसीना बहाने को जरूर मजबूर कर सकते है। इस विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के लाख प्रयास के बाद भी सत्ताविरोधी लहर उठ नहीं रही है, वहीं भाजपा की तमाम कोशिशों के बावजूद मोदी लहर चल नहीं पा रही है, परन्तु अब यह चुनाव प्रतिष्ठा का अवश्य बन गया है। इसलिए भाजपा एवं कांग्रेस ने जीत के लिए सारी ताकत झोंकने का मन बना लिया है। जीत का सारा दारोमदार जातिगत समीकरणों और चुनावी गणित पर निर्भर कर रहा है।

राजसमंद विधानसभा : किरण हैट्रिक की तैयारी, नारायणसिंह कुर्सी छीनने की जोरआजमाइश में

भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव और राष्ट्रीय महिला मोर्चा के पद तक पंहुचने वाली पूर्व सांसद श्रीमती किरण माहेश्वरी पिछले दस साल से विधायक के रूप राजसमन्द का विधानसभा में प्रतिनिधित्व कर रही है। साथ ही वसुन्धरा राजे के मंत्रीमण्डल में जलदाय एवं उच्च शिक्षा मंत्री का दायित्व भी रहा। भाजपा ने तीसरी बार उन्हें मैदान में उतारा है।

उदयपुर नगर परिषद् की सभापति के रूप में अपना राजनीतिक कॅरियर प्रारम्भ करने वाली किरण माहेश्वरी ने 2004 में उदयपुर संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ा। तब चुनाव के परिणाम में उन्हें राजसमंद जिले की चारों विधान सभा क्षेत्र से बहुमत मिला था। यहां की आम जनता को भी वर्षों बाद एक कद्दावर जनप्रतिनिधि मिला, जो उनके मध्य रहकर उनके हर दुखदर्द में साथ रहे। वर्षों बाद राजसमंद को राज्य की केबिनेट में स्थान दिलाने वाली माहेश्वरी की राह इस बार कठिन है।

इस बार कांग्रेस ने उनके सामने पूर्व जिला प्रमुख नारायण सिहं भाटी को उतारा है, जो मिलनसार और निष्कलंक व्यक्तित्व है, मगर भाजपा प्रत्याशी किरण की विकासवादी सोच और गांव–ढाणी तक मजबूत पकड़ के कारण उन्हें कुर्सी से उतारना मुश्किल है। पारिवारिक राजनीतिक पृष्ठभूमि के कारण भाटी 2008 से ही कांग्रेस के टिकट के हकदार रहे हैं, परन्तु गुटबाजी के चलते उन्हें अवसर

नहीं मिला।

लगातार दो बार चुनाव में करारी शिकस्त के बाद कांग्रेस आलाकमान द्वारा भाटी के नाम की घोषणा होते ही कांग्रेस में उत्साह की लहर है। कांग्रेस में टिकट की दावेदार जताने वाले अन्य कार्यकर्ताओं में भी असंतोष व्याप्त है, मगर अब फिर कई हद तक पार्टी के कार्यकर्ताओं को एकजुट करने में वे सफल रहे, मगर कुछ भीतरघात अब भी है।

भाजपा में गुटबाजी के चलते मौजूदा विधायक व कद्दावर नेता किरण माहेश्वरी को बाहरी बताकर विरोध जताने वाले कार्यकर्ता भी अब माहेश्वरी के चुनाव प्रचार में साथ हो गए हैं। इससे भाजपा

अपनी सीट फिर बरकरार रख सकती है। इधर राजपूत मतो का नारायण सिंह के पक्ष में एकीकरण होने से भी माहेश्वरी की हैट्रीक बाधित हो सकती है। इन सारे हालात को देखते हुए भाजपा की जिले में एकमात्र 100 प्रतिशत कन्फर्म माने जाने वाली राजसमंद सीट निकालना कम से कम आसान तो नहीं लग रही है। इसके बावजूद किरण माहेश्वरी का अनुभवी चुनावी मैनेजमेन्ट कांग्रेस के मनसूबो को आसान भी नहीं होने देगा। इधर, किरण माहेश्वरी की शहर के वार्ड से लेकर गांव-ढाणी के लोगों तक की पहुंच और उनसे मजबूत पकड़ के लिए लोग अब भी काफी चाहते हैं। इसी वजह से भाजपा में गुटबाजी होने के बावजूद जमीनी स्तर पर उनकी पकड़ कमजोर नहीं हो पाई और लोगों में उनके प्रति विश्वास कायम है। खास बात यह है कि कांग्रेस सरकार में भी वे राजसमंद में पूर्ण रूप से सक्रिय रही। इस बार वसुंधरा सरकार में केबिनेट मंत्री होते हुए भी राजसमंद विधानसभा क्षेत्र में उनका जनता से संपर्क कम नहीं हुआ।

दूसरी ओर भाटी जिला परिषद में जिला प्रमुख के बाद करीब एक दशक से राजनीति में सक्रिय नहीं रहे, जो उनके लिए काफी कमजोर पक्ष है। हालांकि विपक्षी पार्टी के कार्यकर्ताओं व लोगों में भी भाटी की अच्छी पेठ है। तभी तो वर्ष 2008 में जिला प्रमुख नरेंद्रसिंह सोलंकी के निधन पर हुए उप चुनाव में भाजपा का पूर्ण बहुमत होते हुए भी भाटी को जिला प्रमुख चुन लिया गया। इसी आधार पर पार्टी ने भाटी पर विश्वास जताते हुए किरण के सामने चुनावी रण में उतारा है।

दोनों ही राजनीतिक दलों में माहेश्वरी और भाटी को अप्रत्याशित परिणाम देने वाले कद्दावर नेता के रूप में देखा जा रहा है, जिससे प्रथम दृष्टया माना जा रहा है कि किरण माहेश्वरी का पलड़ा भारी है। अब जनता जर्नादन किसे सर्वाधिक वोट देकर विधायकी का ताज पहनाती है, यह तो आने वाले वक्त ही बताएगा। फिलहाल दोनों ही पार्टी प्रत्याशियों ने शहर-देहात में जनसंपर्क शुरू कर दिया है।

कांग्रेस के सीपी जोशी की प्रतिष्ठा दांव पर, क्या हॉट सीट की जीत दोहरा पाएंगे महेशप्रतापसिंह

नाथद्वारा विधानसभा के चुनाव पर पूरे प्रदेश और देश की नजर है। कांग्रेस के तेजतर्रार और राष्ट्रीय स्तर के नेता डॉ. सीसी जोशी की प्रतिष्ठा दांव पर लगी है। उनके समर्थक उन्हें मुख्यमंत्री का दावेदार मान रहे हैं। 2008 में एक वोट की हार का बदला लेने के लिए कांग्रेसी कार्यकर्ता प्रतिबद्ध तो अवश्य ही नजर आ रहा है।

भाजपा ने इस बार फिर कांग्रेस से आए महेशप्रतापसिंह चौहान को नाथद्वारा से उम्मीदवार बनाकर आज के दस साल पहले के इतिहास को दोहराया है। भाजपा को यह लगता है कि वो इस बार फिर स्वर्गीय कल्याणसिंह चौहान की कहानी दोहराई जा सकती है। कोठारिया राज परिवार के महेश प्रतापसिंह को भाजपा ने प्रत्याशी बनाकर कांग्रेस के सामने कड़ी चुनौती तो खड़ी कर ही दी है। भाजपा का परम्परागत वोट और राजपूत मतो का एकीकरण कांग्रेस के लिए मुश्किलें तो अवश्य ही खड़ी करेगा।

परन्तु कांग्रेस के तेजतर्रार नेता डॉ. सीपी जोशी से पार पाना भाजपा के लिए आसान तो कतई नहीं है। इधर दो बार चुनावी शिकस्त खाने के बाद पिछले पांच साल में सीपी जोशी के सिपहसालार देवकीनन्दन गुर्जर काका की अगुवाई में कांग्रेस ने जबरदस्त किलेबन्दी की है। इस बार कांग्रेस कोई भी पुरानी चूक नहीं करने के प्रति भी सर्तक है।

परिणाम जो भी हो, इस बार फिर नाथद्वारा सीट हॉट सीट तो अवश्य ही बन गई है, जिसमे घात प्रतिघात और भीतरधात भी होगा। दोनों और से धनबल भूजबल का इस्तेमाल की सम्भावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता। क्योंकि यह चुनाव कांग्रेस की प्रतिष्ठा और डॉ सीपी जोशी के राजनैतिक भविष्य का चुनाव

है। क्योंकि कांग्रेस में केन्द्रीय नेतृत्व के चलते करीब एक दशक से क्षेत्र में सक्रिय नहीं रहे सीपी जोशी के लिए अपने क्षेत्र के लोगों का विश्वास जीतना चुनौती है।

हालांकि डॉ. जोशी की क्षेत्र में विकास पुरुष के रूप में भी खास पहचान है। क्योंकि प्रदेश व केन्द्र में मंत्री रहते हुए नाथद्वारा के साथ राजसमंद जिले के विकास में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

चाहे शैक्षिक दृष्टि से नाथद्वारा का आंकलन करें या फिर स्थायी पेयजल समाधान के लिहाज से बाघेरी जल परियोजना हो। राजसमंद में फोरलेन निर्माण का श्रेय भी उन्हीं को है। शहर-देहात की सड़कों, भवनों का शिलान्यास भले ही उनके हाथों न हुआ हो, मगर विकास को लेकर उनकी सोच हमेशा वृहद स्तर पर रही है। इसीलिए लोग अब भी उन्हें चाहते हैं।

ऐसे कद्दावर नेता को शिकस्त देने के लिए भाजपा ने महेश प्रतापसिंह चौहान को मैदान में उतारा है। टिकट मिलते ही भाजपा में विरोध के स्वर मुखर हो गए, मगर बाद में पार्टी के तमाम पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं को आलाकमान ने एकजुट कर दिया। ऐसे में नाथद्वारा हॉट सीट बन गई है, जिस पर भाजपा और कांग्रेस के शीर्ष नेताओं की भी नजर है।

अरविन्द मुखिया
स्वतंत्र पत्रकार
छोटा गोपाल पुरा, नाथद्वारा
मोबाईल - 94141 72422

भीम में चल रही परिवर्तन की लहर, इस बार तीसरा न उठा ले फायदा ?

भीम. भारत निर्वाचन आयोग की विधानसभा चुनाव नामांकन सम्बंधी प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद स्थिति स्पष्ट हो चुकी है। भीम देवगढ़ विधानसभा क्षेत्र से तेरह प्रत्याशी चुनावी मैदान में अपना भाग्य आजमा रहे है। मुख्य मुकाबला भाजपा के निवर्तमान विधायक हरि सिंह रावत, कांग्रेसी युवा नेता सुदर्शन सिंह रावत एवं समाजसेवी अजय सोनी के मध्य त्रिकोणीय संघर्ष बन गया है। काफी लम्बे अर्से से हार का दंश झेलने वाले कांग्रेस कार्यकर्ता पूरे जोशो खरोश से चुनावी जंग में आ डटे हैं। नामांकन रैली में कांग्रेसी नेता सुदर्शन सिंह ने जिस तरीके से शानदार एन्ट्री की है। उससे प्रतीत होता है कि दिलचस्प घटनाक्रम घटित होने वाला है।

दो दो हाथ होने के लिए पूरी तैयारी से साम दाम, दण्ड, भेद युवा शक्ति की आजमाइश होनी है। जनसंघी विधायक दिवंगत मेजर फतेह सिंह के पौत्र एवं पूर्व गृह राज्य मंत्री लक्ष्मणसिंह रावत के पुत्र सुदर्शन सिंह को राजनीति विरासत में मिली है। जिसके चलते इलाके में काफी दबदबा है एवं वोट बैंक पर स्थायी पकड़ भी। पावरफुल नेटवर्क व मैनेजमेंट उन्हें विजय पताका फहराने के लिए प्रेरित करता है तथा उज्जवल भविष्य के संकेत दे रहा है। साथ ही भाजपाइयों की नींद हराम कर दी है। जितनी आसान राहें पूर्व में दिखाई पड़ रही थी। वह अब कठिन प्रतिस्पर्द्धा में तब्दील हो गई है। युवा वर्ग चुम्बकीय आकर्षण में बंधा सहानुभूति पूर्वक कांग्रेस की जानिब खिंचा जा रहा है।

हालांकि इस त्रिकोण में एंटी इनकमबैंसी फेक्टर से आमजन त्रस्त नजर आता है। यह सियासत एक उबाऊ व बोर्डम पैदा करने वाला महसूसात बन जाता है। जब एक ही व्यक्ति आरोपित किया जाता रहा हो। वंशवाद व पुनरावर्तन को दरकिनार कर आवाम परिवर्तन चाहती है। निर्दलीय अजय सोनी शिक्षित परिवार के कुशल उद्यमी है तथा गत तीन वर्षो से सामाजिक संस्था देवजागरण मंच के माध्यम से गोपनीय तरीके से हर पंचायत में सेंधमारी करने हेतु संघर्षरत है। क्षेत्रवाद भी एक मुद्दा है। आजादी के बाद से तीन बार यह सीट देवगढ़ राजघराने के खाते में चली गई। मगर गत कई चुनाव में इन परिवारों का कब्जा रहने से असंवेदनशीलता, कर्तव्यहीनता व निरंकुशता हावी हो गई। जिसके चलते हालात अराजक बन गए। कई लोग पुनरावर्तन से आक्रोशित है, तो साथ ही उनके हमसायों द्वारा पैदा किय गए अवांछित बर्ताव से व्यथित भी है।

रावत बाहुल्य क्षेत्र में 2 लाख 7 हजार 900 मतदाता है, जिसमें करीब आधी जनसंख्या रावत जाति की है। इसलिए इस सीट पर जातिगत समीकरण ही प्रभावी रहे हैं। मृदुल व्यवहारी एवं आमजन से विनम्रता से पेश आने का करीना हरिसिंह को निरंतर कामयाबी दिलाता रहा है। क्षेत्र के स्वर्णिम विकास की महत्वकांक्षा ने उन्हें लोकप्रिय बनाया तथा सदैव अपने प्रतिद्वंदी को पटखनी देने में सफल रहे हैं। हर चुनाव में कोई न कोई देवदूत की तरह आ टपकनें वाले थर्ड फ्रंट की वजह से कांग्रेस का खेल बिगड़ता रहा है। इस समय हालात भिन्न प्रतीत होते है।

देवगढ़ क्षेत्र के गुर्जर राजपूत अनुसूचित जाति जनजाति अल्पसंख्यक आदि मतदाता को एकजुट कर मुस्तैदी से कौन रिझा पाता है, विजयश्री उसी के कदम चूमेगी। हालांकि सुदर्शन सिंह फ्रेस केंडिडेट है तथा युवा होने से उर्जस्वी एवं वर्चस्वी भी होने तथा कठिन परिस्थितियों को अपने हक में रूपांतरित करने की कुव्वत रखते हैं।

मगर प्रदेश के हालात एक रूप हवा का फायदा उठाने में किस हद तक सफल होगें, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि वो सकारात्मक रूप से मनोयोग संकल्पबद्ध व दृढ़ता पूर्वक डटकर अपने बिजनेस पार्टनर रहे हरिसिंह को प्रतिकारात्मक रवैया अपनाकर पिछली हारों का हिसाब कर पाते हैं। बहरहाल ऊंट किस करवट बैठेगा। यह जनता जनार्दन ही जाने या वक्त ही जाने। पर जहां प्रदेश में परिवर्तन की प्रक्रिया द्रुतगति से चल रही है, तो इससे यह सीट भी अछूती नहीं रहने वाली है।

सिद्धार्थ गन्ना
वरिष्ठ लेखक- विचारक
भीम, 98286-79288

जयवर्द्धन की वार्षिक बुकिंग मात्र 150 रुपए में

विधानसभा प्रत्याशियों के लिए तय हो योग्यता और परीक्षा

जिन प्रत्याशियों के पास जनाधार नहीं हो उन्हें नाहक स्वयं का श्रम व पैसा बर्बाद नहीं करना चाहिए। न ही प्रशासन तंत्र का दुरूपयोग नहीं करना चाहिए। जम्हूरियत में आदमी आजाद है, मगर मनमाने ढ़ंग से प्रयोग कर निर्वाचन प्रणाली का उपहास नहीं बनाना चाहिए। आयोग को चाहिए विधानसभा लोकसभा एवं स्थानीय निकाय चुनावों में कठोर मापदण्ड अपनाने चाहिए। प्रत्याशी की योग्यता का आंकलन कर ही आम चुनावों में मौका मयस्सर करना चाहिए। सरकारी नौकरी प्राप्त करने हेतु परीक्षा जरूरी है, मगर सरकार बनाने के लिए न तो कोई उचित अर्हता है न परीक्षा। मात्र शौक दिखावा व संसाधनों के बेजा इस्तेमाल पर लगाम जरूरी है। चुनावों में अक्सर देखा जाता है कि दो या तीन उम्मीद्वारों के अलावा शेंष तो जमानत भी नहीं बचा पाते । कुकुरमुत्तों की तरह अनावश्यक उग आने वाले प्रत्याशी बने लोग खेत की फसल को नुकसान पहुंचाकर निर्वाचन प्रणाली की अस्मिता धुमिल करते है। यह लोकतंत्र का महान पर्व है। अपनी निजी शत्रुता निभाने प्रतिद्वंदी के लिए मुसीबतों की दिवार खड़ी कर उसे सफल होने से रोकना या क्षुद्र स्वार्थ पूर्ति करना मकसद नहीं होता है, वरन हालात को बदलना उद्देश्य बने। जनकल्याण व सेवा का प्रकल्प व्यवसाय बन चला है। जैसे घर की दुकान हो या विरासत में पुरखों की दी गई सौगात हो। जिस पर येन केन प्रकारेण मालकियत हासिल करनी हो। कतार में खड़े रहना हमारी फितरत नहीं। हमारी मगरूरी हमें समानान्तर सत्ता खड़ी करने हेतु उद्वेलित करती है। प्रजातंत्र सौदेबाजी नहीं है। जनता जनार्दन की अदालत में ही फैसला लिया जाता है। वहीं नियंता है वही भाग्य विधाता।

आपके लिए बना लाया है, कहता है कि कोई डिग्री पूछे तो ये डी गिरी दिखा देना

एम. सिंघानिया
भीम

इस बार जीत दोहराना राठौड़ के लिए चुनौती, परमार कुर्सी छीनने को बेताब

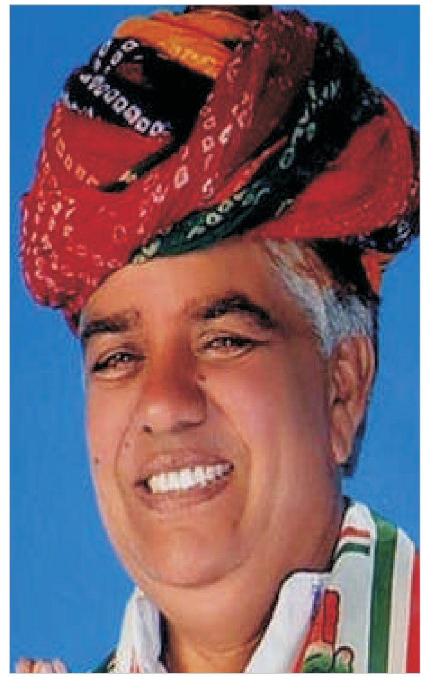

अपने पहले ही चुवान में प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे कांग्रेस के कद्दावर नेता स्वर्गीय हीरालाल देवपुरा को शिकस्त देकर कांग्रेस के गढ़ माने जाने वाले कुम्भलगढ से विधानसभा में पंहुचने वाले भाजपा के सुरेन्द्रसिंह राठौड 1993, 2003 और 2013 में यहां से विधायक बने। एक बार उन्हें राज्यमंत्री मंडल में भी प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त हुआ है। सुरेन्द्रसिंह राठौड अपने क्षेत्र में इतने लोकप्रिय है कि वे 1993 से भाजपा के नेता के रूप लगातार 25 साल से स्थापित नेतृत्व कर रहे हैं।

भाजपा संगठन पर इनकी जबरदस्त पकड़ है। हालांकि उनके साथ यह विडम्बना रही कि पहला चुनाव 1993 में जीते तो दूसरा 1998 में हारे, तीसरा में 2003 में जीते तो चौथा 2008 में हारे, फिर पांचवा 2013 में जीते। एक जीत, एक हार का क्रम इस बार 2018 में बरकरार ना रहता है या बदल जाता है, यही यक्ष प्रश्न है? जिसका उत्तर अभी नहीं दिया जा सकता है। इस क्षेत्र की विषम जातिगत समीकरणो के कारण 2008 में कांग्रेस के गणेशसिंह परमार ने राठौड़ को चुनावी शिकस्त दी थी।

कांग्रेस ने इस बार फिर कुछ आंतरिक विरोध के बावजूद गणेशसिंह परमार को मैदान में उतारा है। सरल और मिलनसार स्वभाव के परमार लगातार अपने क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं। कांग्रेस के दिग्गज डॉ. सीपी जोशी का वृहद हाथ परमार के साथ होने से उन्हें कमजोर उम्मीदवार मानना भाजपा के लिए भारी पड़ सकता है।

कुंभलगढ़ व आमेट तहसील क्षेत्र में फैले विधानसभा में मौजूदा विधायक राठौड़ के साथ कांग्रेस प्रत्याशी परमार भी जनता के बीच सक्रिय नहीं रहे। उद्घाटन या धार्मिक आयोजनों के अलावा कभी राठौड़ या परमार ग्राम पंचायत स्तर तक लोगों की समस्याएं सुनने और उनके दु:ख दर्द में सहभागी भी नहीं बने। हालांकि क्षेत्र के लोगों के लिए कोई तीसरा मजबूत विकल्प भी नहीं है। ऐसे में जनता भाजपा या कांग्रेस दोनों में से ही किसी एक को चुनेगी। क्योंकि वर्ष करीब ढाई दशक से यही सिलसिला चलता आया है कि एक बार भाजपा तो दूसरी बार कांग्रेस का प्रत्याशी हमेशा जीतता रहा है। ऐसे में इस बार वापस कांग्रेस की जीत होने की चर्चा आम है। तभी तो इस बार राठौड़ के लिए जीत दोहराना चुनौती है, मगर परमार इस बार कुर्सी छीनने को बेताब है।

फिलहाल दोनों ही प्रत्याशियों ने कुंभलगढ़ क्षेत्र की जनता का दिल जीतने के लिए जनसंपर्क तेज कर दिया। क्योंकि कुंभलगढ़ विधानसभा में हार व जीत का फैसला हमेशा कुंभलगढ़ तहसील क्षेत्र के मतदाताओं के हाथ ही रहा है। कुंभलगढ़ तहसील क्षेत्र के ज्यादातर लोग खरवड़, परमार व भील समुदाय के है। कांग्रेस का प्रत्याशी परमार होने से खरवड़, परमार जाति का झुकाव उनकी तरफ रहने की संभावना है। हालांकि आमेट क्षेत्र में राठौड़ को ही हमेशा लीड मिलती रही है। इसी तरह कांग्रेस के लिए भी आमेट क्षेत्र के वोट परम्परागत ही है, जिसमें बदलाव की गुंजाइश आंशिक है।

इस बार कुंभलगढ़ में एक दर्जन से ज्यादा प्रत्याशी मैदान में है, जो विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के अलावा निर्दलीय भी है, मगर किसी भी प्रत्याशी का वर्चस्व इतना नहीं है कि वे भाजपा के राठौड़ व कांग्रेस परमार के वोट बैंक को प्रभावित कर सकें।

मैं सिर्फ गीता के कर्म सिद्धांत पर विश्वास करती हूं : किरण

जनता के सवाल : प्रत्याशी के जवाब

राजसमंद की जनता के कुछ तीखे व रोचक सवालों पर जयवर्द्धन के जरिये भाजपा प्रत्याशी किरण माहेश्वरी ने दिए खुलकर जवाब। इसी पर हमारे उप सम्पादक विजय शर्मा द्वारा लिया Exclusive Interview

सवाल : आपका राजनीतिक सफर किस प्रकार प्रारंभ हुआ और अब तक क्या क्या दायित्व रहे ?

जवाब : मेरे परिवार में पिताजी आरएसएस से जुड़े रहे और उन्हीं के संस्कारों और आदर्शों पर चलकर मैंने पहले दुर्गावाहिनी के एक छोटे से कार्यकर्ता के रूप में अपना सफर प्रारंभ किया। 1990-91 में महिला मोर्चा राजसमंद में मंत्री का दायित्व निभाया। फिर 1994 में नगरपरिषद उदयपुर सभापति का दायित्व मिला। 2004 में उदयपुर-राजसमंद सांसद बनने का मौका मिला। 2008 से लगातार राजसमंद की जनता के प्रगाढ़ प्रेम की बदौलत मुझे विधायक चुना गया। इसी दौरान उच्च शिक्षा व जलदाय मंत्री के दायित्व भी रहे, जो बखूबी निभाए। इसी तरह भाजपा महिला मोर्चा में मंडल अध्यक्ष से राष्ट्रीय अध्यक्ष और भाजपा में राष्ट्रीय सचिव, महासचिव व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का दायित्व रहा।

सवाल : आपके पन्द्रह वर्षों के राजसमंद कार्यकाल में क्या क्या बड़ी उपलब्धियां है ?

जवाब : मेरे सांसद कार्यकाल के दौरान ही मैंने उदयपुर से गोमती तक फोरलेन निर्माण की स्वीकृति करवाई। फिर केन्द्र में जब नई सरकार बनी, तब यह कार्य हुआ। राजसमंद का मुख्य उद्योग मिनरल इंडस्ट्रीज आबादी से डेढ़ किमी. दूर होने की बाध्यता से मिनरल इंडस्ट्रीज रेड जोन में आ गई थी और अधिकांश इंडस्ट्रीज के बंद होने की नौबत आ गई थी, मगर सरकार से 500 मीटर की दूरी तय करवा कर पूरे मिनरल इंडस्ट्रीज की कठिनाई दूर की। मिनरल क्षेत्र में कच्चा माल बाहर जाने से रूकवाया, जिससे मिनरल इंडस्ट्री को पुनर्जीवन मिला। राजसमंद में गौरवपथ, महाराणा राजसिंह पैनोरमा, अमर जवान ज्योति उद्यान, अन्नपूर्णा माता मंदिर विकास, टोल में मात्र 50 रुपए प्रतिमाह पास की सुविधा जैसे एतिहासिक व महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं।

सवाल : राजसमंद में पढ़े लिखे बेरोजगारों के लिए मार्बल उद्योग के अलावा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने हेतु विभिन्न नए उद्योग स्थापित करने की दिशा में क्या योजना है ?

जवाब : राजसमंद से भीलवाड़ा मार्ग पर नया इंडस्ट्रीयल हब बनाने की योजना है। इस मार्ग पर उपलब्ध सरकारी जमीन पर नया रीको एरिया बनाकर औद्योगिक विकास को गति देंगे। फिलहाल इस दिशा में काफी चुनौतियां है। इसके लिए गैस का प्रबंध तो नए बजट द्वारा भीलवाड़ा से लाइन बिछाकर सकते हैं, लेकिन माही या देवास से पानी राजसमंद झील तक आने के बाद ही इस योजना पर आगे कार्य हो पाएगा। पर्यटन के क्षेत्र में भी नवीन रोजगार सृजन का प्रयास है। कौशल प्रशिक्षण एवं स्वरोजगार द्वारा बेरोजगारी दूर करने का कार्य केन्द्र व राज्य सरकार बड़े स्तर पर कर रही है।

सवाल : गंगा यात्रा से शुरू हुई आपकी यह राजनीतिक यात्रा गोमती एवं राजसमंद झील में पानी की सतत आवक की दिशा में क्या भविष्य रखती है ?

जवाब : राजसमंद झील हमेशा भरी रहे, यही मेरा ध्येय है। देवास से पानी लाने के लिए प्रयास कर डीपीआर बनवाई। इसके अलावा माही से भी पानी लाने के लिए सर्वे शुरू करवा दिया। माही हो, चाहे देवास हो, मगर राजसमंद झील को सदा भरी रखने के लिए मैं दृढ़ संकल्पित हूं। गोमती नदी पेटे से भी जनसहभागिता से अभियान चलाए और अवरोधक हटाकर जलागम मार्ग को बहाल कराए, जिसका परिणाम रहा कि 44 साल बाद 2017 में झील छलकी। पानी की आवक बढ़ाने के लिए 18 करोड़ से खारी फीडर की मरम्मत करवाई।

सवाल : हमारा राजसमंद हॉकी, कुश्ती, फुटबॉल, तैराकी आदि खेल के प्रति समर्पित खिलाड़ियों के लिए जाना जाता है। इस दिशा में क्या प्रयास किए और आगे क्या योजना है ?

जवाब : ओपन खेल स्टेडियम के अलावा कांकरोली व राजनगर में दो इनडोर स्टेडियम भी बनाए। इसी तरह ग्रामीण क्षेत्र में कई जगह खेल मैदान व वालीबॉल कोर्ट विकसित किए। 44 में से करीब 10 पंचायतों में ओपन जिम लगा चुके हैं और भविष्य में हर ग्राम पंचायत स्तर पर ओपन जिम के साथ खेलकूद की सुविधाएं विकसित करने का प्लान है।

सवाल : आप एक महिला है, तो यहां महिलाओं में आपके प्रति उम्मीदें बढ़ जाती है, तो क्या ऐसी योजना है, जो महिलाओं को आगे ला सके ?

जवाब : महिला सशक्तिकरण मेरी प्राथमिकता रही है। इसी के तहत मैंने पार्टी में भी सभी स्तर पर एक तिहाई महिला आरक्षण लागू करवाया। हमारी मुख्यमंत्री वसुंधराजी ने भामाशाह योजना में परिवार की मुखिया महिला को बनाते हुए महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर स्थापित किया। राजसमंद में गर्ल्स कॉलेज खोला और आगे भी महिलाओं के उत्थान की दिशा में सदैव प्रयास रहेगा।

सवाल : राजसमंद को लेकर आपको व्यक्तिगत रूप से बेहतर पहलू क्या लगता है ?

जवाब : यहां के लोगों का प्रेम, मेरे प्रति विश्वास और हर विकास कार्य में सहयोग। यही मुख्य पहलू है, जिसकी वजह से राजसमंद शहर व ग्रामीण क्षेत्र का समग्र विकास हो सका है। गौरवपथ के साथ कई प्रमुख सड़कों को चौड़ी करने में लोगों ने मुझ पर विश्वास कर जमीनें छोड़ी, तभी शहर विकास की दिशा में आगे बढ़ सका। हर विकास कार्य के लिए क्षेत्र के लोगों का पूर्ण सहयोग रहा।

सवाल : पांच वर्षों में दो मंत्रालय रहे। दोनों जिम्मेदारियों के निर्वहन से राजसमंद को क्या लाभ मिल पाया ?

जवाब : मेरे पास इन पांच वर्षों में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं उच्च शिक्षा मंत्रालय रहा है। इन दोनों ही मंत्रालय से राजसमंद को बहुत कुछ लाभ मिला है, जिसमें तीन पंचायतों बिनोल, फियावड़ी व महासतियों की मादड़ी को बाघेरी से जोड़ा गया। सांगठकला में पांच करोड़ की नई परियोजना स्वीकृत करवाई। इस तरह कई गांव- ढाणियों को एक ही जगह ट्यूबवैल, मोटर व टंकी बनाकर पेयजल के लिए आत्मनिर्भर बनाया। 18 करोड़ की लागत से खारी फीडर की मरम्मत और नहरों की मरम्मत के लिए 30 करोड़ का बजट

स्वीकृत कराया। उच्च शिक्षा मंत्रालय मिलने के बाद मैंने यहां के बॉयज कॉलेज में पीजी के नए विषय शुरू करवाए और कॉलेज के भवन में दो करोड़ का विकास करवाया। साथ ही राजसमंद की बालिकाओं के लिए राजकीय कन्या महाविद्यालय खुलवाया और नई भर्ती कराकर व्याख्याता की कमी दूर की।

सवाल : पार्षद से राज्य सरकार में मंत्री बनने तक के सफर के बाद अब अगला पड़ाव किसे मानती है ?

जवाब : मैं जब पार्षद बनी तो मैनें नहीं सोचा था कि मैं विधायक या सांसद का चुनाव लडुंगी। मैं गीता के कर्म सिद्धान्त पर विश्वास करती हूं। कर्म ही पूजा है। पद की महत्वाकांक्षा के लिए मैं कार्य नहीं करती हूं। आगे भी मैं इसी तरह सतत पार्टी के लिए से कार्य करती रहूंगी और पार्टी से मुझे जो भी दायित्व मिलेगा, उसे मैं पूरी निष्ठा से निर्वहन करती रहूंगी।

सवाल : आम तौर पर विधायक चुने जाने के बाद में जनता की पहुंच से बाहर हो जाते हैं, मगर आप मंत्री रहते हुए भी हर तीसरे- चौथे दिन राजसमंद में उपलब्ध रही हैं। क्या इससे पूरे राजस्थान के साथ न्याय हो पाता है ?

जवाब : जनता ने वोट दिया है, तो जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरना ही जनप्रतिनिधि का दायित्व है। पार्षद, सभापति, विधायक, सांसद से मंत्री तक जो भी दायित्व रहा, मगर मैं जनता से दूर कभी नहीं रही। मेरे जीवन में मैं हमेशा जनता के कार्यों के लिए सजग रही हूं। जनता के बीच आना जाना, सतत संवाद, उसके सुख-दु:ख में सहभागी बनते हुए क्षेत्र का विकास करना ही मेरी प्राथमिकता रहती है। रही बात मंत्रालय की, तो मैंने राजस्थान में 8 वर्षों से अटकी भीलवाड़ा की चम्बल परियोजना को पूर्ण करवाया। विभिन्न जिलों में सोलर ऊर्जा संचालित 1000 पनघट, 2000 आरओ एवं जनता जल योजना में सुदृढ़ीकरण के लिए 400 करोड़ के कार्य करवाए। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 81 नए कॉलेज खोले। उपखंड स्तर पर 66 सालों में सिर्फ 111 कॉलेज थे और हमने 4 सालों में उपखंड स्तर पर 64 नए कॉलेज खोले। 90 फीसदी नए कॉलेजों के लिए जमीनें भी आवंटित हो गई और नए भवनों के लिए छह-छह करोड़ रुपए आवंटित हो गए हैं। पहले राजस्थान में कई कॉलेज सिर्फ एक या दो व्याख्याता के भरोसे चल रहे थे, जिस पर 1339 की भर्ती निकाली, जिसमें से 928 की नियुक्ति हो चुकी है। नए अंग्रेजी व्याख्याताओं की स्वीकृति जारी हो चुकी है, जो चुनाव आचार संहिता के बाद भर्ती हो जाएगी। अप्रेल 19 तक रिटायर होने वाले व्याख्याताओं के पदों की पूर्ति के लिए 830 की नई भर्ती भी निकाल चुके हैं।

सवाल : राजसमंद में ऐतिहासिक, भौगोलिक, धार्मिक व सांस्कृतिक विरासत काफी पुष्ट है, जिससे पर्यटन विकास की काफी संभावनाएं है। झील का रिंग रोड बनाकर पर्यटन विकसित किया जा सकता हैं। इस दिशा में क्या प्रयास करेंगे ?

जवाब : बिल्कुल, पर्यटन का विकास भी मेरी प्राथमिकता रही है। राजसमंद पुरातात्विक सम्पदा का धनी है और वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप की जन्म स्थली है। यहां नौचोकी पाल, दिवेर व कुंभलगढ़ दुर्ग सहित कई ऐतिहासिक गौरव स्थल है। इन सभी पर्यटक स्थलों का नियमित रख रखाव एवं इन्हें विकसित करना मेरा ध्येय है। हिन्दुत्व की रक्षा करने वाले महाराणा राजसिंह के जीवन चरित्र को दर्शाती प्रदर्शनी (पैनोरमा), जिला कलक्ट्री राजसमंद के सामने अमर जवान ज्योति स्मारक, अन्नपूर्णा माता मंदिर तक हाइवे सेवाली से सीधी सड़क बनाकर, जीर्ण-शीर्ण रूठी रानी महल का जीर्णोद्धार, सनसेट, सनराइज पॉइंट विकसित किए हैं। भविष्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए झील में नौकायन शुरू करेंगे। जहां तक रिंग रोड का सवाल है, यहां हमने सर्वे भी करवाया है। झील किनारे लोगों की काफी जमीनें आ रही है और श्री द्वारकाधीश मंदिर से एरिगेशन तक कई मकान है, जिससे फिलहाल सेवाली से नौचोकी होकर श्री द्वारकाधीश मंदिर तक सेमी रिंग रोड की भावी योजना है।

सवाल : राजसमंद शहरवासियों का बड़ा दर्द है कि झील की सिंचाई की नहरों से काफी मात्रा में पानी व्यर्थ बह जाता है। व्यर्थ बहते पानी को बचाने के लिए कोई ठोस कार्ययोजना है ?

जवाब : राजसमंद झील के व्यर्थ बहते पानी का दर्द मुझे भी है और मेरा भी झील से आत्मिक जुड़ाव है। तभी झील भरने की कामना पूरी होने पर मैंने कांकरोली से चारभुजा तक पदयात्रा की। जब से झील से सिंचाई की नहरें बनी, तब से इन नहरों की किसी ने सुध नहीं लेने से नहरें जीर्ण-शीर्ण हो चुकी थी, जिससे काफी तादाद में पानी व्यर्थ बहा। मैंने लेफ्ट, राइट व माइनर केनाल (नहर) की मरम्मत के लिए तीस करोड़ का बजट स्वीकृत कराया, जिसका कार्य प्रगति पर है। अब झील का पानी व्यर्थ नहीं बहेगा।

सवाल : राजसमंद में ब्रॉडगेज का सपना कभी मूर्त रूप ले सकेगा ?

जवाब : निश्चित रूप से ब्रॉडगेज आएगी। इसके लिए हम हर स्तर पर प्रयासरत है।

सवाल : राजसमंद में स्थानीय व बाहरी प्रत्याशी की काफी चर्चा है। क्षेत्र के विकास व राजनीति में यह मुद्दा कितना महत्त्व रखता है ?

जवाब : मैं तो स्थानीय ही हूं। मैंने जब राजनीति प्रारंभ की, तब उदयपुर व राजसमंद जिला एक ही था और जब शांतिलाल जी खोईवाल विधायक बने, तब यहीं से एक कार्यकर्ता के रूप में मैंने कार्य करना प्रारंभ किया। 1991 से राजसमंद की राजनीति में सक्रिय रही हूं। आमजन के लिए विकास ही महत्त्वपूर्ण मुद्दा होता है। स्वयं को स्थानीय बताने वाले कई नेता जनता के बीच कभी नजर ही नहीं आते हैं।

सवाल : अवैध बजरी खनन व दोहन पर कोई कारगर कार्रवाई क्यों नहीं हो पाती है ?

जवाब : समय समय पर हमने अभियान चलाकर इसे रूकवाया है। बजरी रोकने के लिए मैं खुद बनास नदी पेटे में गई और देर रात तक रूक कर कई मशीनें व डम्पर पकड़वाए हैं। निश्चित ही आगे भी मेरा इस दिशा में प्रयास रहेगा।

सवाल : गरीबी उन्मूलन के लिए सरकार की कई मुफ्त योजनाएं है, मगर गरीबों का जीवन स्तर क्यों नहीं सुधर पाया ?

जवाब : प्रधानमंत्री मोदीजी ने नारा दिया है कि सबका साथ, सबका विकास। इसके तहत गरीबों का जीवन स्तर उठाने के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना से मकान बनाकर, उज्जवला योजना में मुफ्त गैस कनेक्शन देकर, गरीब किसानों को पानी, बिजली व फसल बीमा की योजनाओं से जोड़कर उनके जीवन स्तर में बदलाव किया है। हमने गरीबी हटाने का नारा नहीं दिया, बल्कि उन्हें सम्मान के साथ जीने हेतु सक्षम बनाया है।

सवाल : क्या राजनीति कभी धर्म और जातिवाद से मुक्त हो पाएगी ?

जवाब : स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि धर्म भारत की आत्मा है। राजनीति व धर्म कभी अलग नहीं हो सकते, लेकिन राजनीति में जातिवाद नहीं होना चाहिए। राजनीति में राष्ट्रसेवा का जज्बा होना चाहिए और देश के लोगों को धर्म में बांटकर राजनीति नहीं करनी चाहिए।

सवाल : क्या विकास के मुद्दे पर भी चुनाव जीते जा सकते हैं या जातिवाद के दम पर ही ?

जवाब : बिल्कुल, जीते जा सकते हैं और विकास के मुद्दे पर ही चुनाव लड़ना चाहिए। ना कि जाति के नाम पर। भारतीय जनता पार्टी सिर्फ विकास के मुद्दे पर ही चुनाव लड़ती आई है। मैं विकास के मुद्दे पर ही चुनाव लड़ रही हूं। मैंने राजसमंद में कई विकास कार्य कराए और इसी आधार पर जनता मुझे लगातार जीता रही है।

सवाल : क्या कभी राम मंदिर बनेगा ?

जवाब : 100 प्रतिशत बनेगा। मैं स्वयं 1992 में अयोध्या कारसेवा में गई थी और मुझे गर्व है कि यह मन्दिर निश्चित रूप से भारतीय जनता पार्टी ही बनाएगी।

सवाल : राजसमंद को लेकर क्या कोई ऐसा कार्य है, जिसे नहीं कर पाने की कसक आपके मन में रह गई हो ?

जवाब : राजसमंद झील सदानीरा बनी रहे, देवास या माही से पानी लाने के लिए प्रयासरत हूं। यही मेरा संकल्पित कार्य है, जो अभी अधूरा है।

सवाल : राजसमंद की जनता से आप क्या कहना चाहेंगी ?

जवाब : मैं सिर्फ चुनाव जीतने के उद्देश्य से जनता के बीच नहीं जाती हूं बल्कि पार्टी की विचारधारा पर चलते हुए क्षेत्र का विकास करना ही मेरी कार्यशैली है। मैंने राज्य एवं केन्द्र सरकार के सहयोग से नगरपरिषद, जिला परिषद व विविध संस्थाओं को साथ लेकर राजसमंद शहर के छोटे से वार्ड से लेकर दूरस्थ गांव-ढाणी तक विकास के कार्य किए हैं। जनता से मैं यह कहना चाहूंगी कि आपका वोट अमूल्य है। आप अपने विवेक के साथ अवश्य मतदान करें।

*जनता के सवाल, प्रत्याशी के जवाब... **जयवर्द्धन** की इस पहल में शहर के कई जागरूक लोगों ने अपने सवाल भेजे। उन्हीं के चुनिंदा सवालों पर जयवर्द्धन ने भाजपा प्रत्याशी किरण माहेश्वरी का लिया साक्षात्कार। राजसमंद शहर के **राहुल दीक्षित, सूर्यप्रकाश दीक्षित, नीलेश पालीवाल, समीर सुराणा, एडवोकेट दुर्गेश पालीवाल, प्रकाश जांगीड़, सुनील व्यास, उदयलाल, भागीरथ रेगर** सहित कई लोगों ने सवाल किए। जयवर्द्धन की इस मुहिम को सफल बनाने के लिए सभी प्रबुद्धजनों का धन्यवाद।*

तीखी मिर्ची

अटेंशन

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजस्थान में चुनाव चल रहा है, मगर हम बात करेंगे गुजरात के चुनाव की। यहां के एक नेता केपी तिवारी को कुछ दिनों से कोई अटेंशन नहीं दे रहा था। किसी भी अटेंशन की कोशिश भी करते, तो सिर्फ टेंशन ही हाथ आ रही थी। इससे वो बड़े खफा थे। जो लोग उनके आने पर दौड़ दौड़ कर माला पहनाते थे, वो आजकल उन्हें देखकर मुंह फेर रहे थे। जो टीवी अखबार वाले उनके इंटरव्यू के लिए आगे पीछे दौड़ते थे, वे ही आजकल इन्हें भाव नहीं दे रहे थे। ये मीडिया वाले भी नेताओं की तरह अवसरवादी हो गए हैं। चुनाव जीतने के बाद जैसे नेता जनता को भूल जाता है, उसी तरह मीडिया वाले भी कुर्सी खिसकते ही नेताओं के चेहरे पर कैमरा ले जाना छोड़ देते हैं। पहले कभी तिवारी अपनी पार्टी में बहुत बड़ी पहुंच रखते थे, मगर कुछ दिनों से पार्टी ने उन्हें निर्वासित कर दिया। उन्हें पार्टी के बड़े मंचों पर भी बोलने का मौका नहीं दिया जा रहा था। ये तो सभी पार्टियों में चलता है, जहां जिस नेता से मतलब निकलता है, वहां उसको सिर पर बिठा दिया जाता है, जहां देख लेते हैं कि अब जरूरत नहीं है, उन्हें आडवाणी बना दिया जाता है।

इसी तरह तिवारीजी के सभी बड़े पद छीन लिए गए। कारण यह हुआ कि जहां पार्टी में बेईमानी के सभी काम भी ईमानदारी से करने पड़ते हैं। उन्होंने ऐसा ही ईमानदारी का कोई काम बेईमानी से कर दिया था। पार्टी के आलाकमान को यह बात अखर गई, तो उन्हें पुन: अपने शहर लौटना पड़ गया। आने के बाद दिनभर शहर में घुमने के बावजूद कोई एक दुप्पटा भी उनके गले टांगने को राजी नहीं था। अब उन्हें अपने घर की चारदीवारी के अंदर बैठना बिल्कुल भी नहीं सुहा रहा था। इन नेताओं की कुर्सी चमचो के कंधों पर होती है। जैसे ही चमचे भाव देना बंद करते हैं, तो नेता धड़ाम से गिरते हैं।

टीवी पर बड़े- बड़े नेताओं के फोटो देखकर मन में कुलबुलाहट होने लगती, उन्हें अपने पुराने दिन याद आने लगते। पुन: उन्हें बड़े नेता के रूप में जनता का ध्यान चाहिए था। उन्होंने सभी अखबार, टीवी वालों और शहर के वरिष्ठ लोगों को अपने घर खाने पर बुलाया और समझाया भी कि मैं आपके यहां का बड़ा नेता हूं। आप मुझे भी भाव दीजिए, मगर सभी ने एक सुर में उनकी बात को खारिज करते हुए कहा कि जब आपकी पार्टी आपको भाव नहीं दे रही तो हम क्यों दे? अब उनके पास कोई रास्ता नहीं बचा था। एक दिन बैठे बैठे पुराना अखबार पढ़ने को मिला, जिसमें केजरीवाल की अपोजीशन के नेता पर अनर्गल बयानबाजी से सारे मीडिया जगत में तहलका मच गया था। वहीं 2 दिन पहले केजरीवाल पर किसी ने जूता फेंका तो सारी जनता केजरीवाल की जय जयकार करने लगी।

इन नेताओं का अलग विज्ञान चलता है, जहां आम आदमी जूते खाने के बाद अपना मुंह छुपाता है, वही ये नेता जूते खाने के बाद सभी को अपना चेहरा दिखा कर सहानुभूति बटोरते हैं और जूते खाकर भी इनका राजनीतिक कद बढ़ जाता हैं। लगता है शायद जूते फेंकने वाले को नए जूते भी ये नेता ही दिलाते होंगे। ये अखबार पढ़कर अब नेताजी के चेहरे पर नई चमक दिखाई दे रही थी। उन्हें शायद कोई नया आइडिया हाथ लग गया था।

नेताजी ने अपनी एक सभा आयोजित की, जिसमें विडियोग्राफर को भी बुलाया और अपोजिशन के बड़े- बड़े शीर्ष नेताओं की जाति के बारे में अनर्गल बयान दिए, जब बयान ही देना है, तो छोटे मोटे के खिलाफ क्या देना? अब सारे अखबार और टीवी चैनल वाले बार- बार इन्हीं के भाषण को दिखा रहे थे। राजधानी तक इनके भाषण के चर्चे होने लगे थे। नेताजी को अब हर आदमी अटेंशन देने लगा था। इनकी पार्टी के आलाकमान भी अंदर ही अंदर इस प्रसिद्धी पर जलने लग गए थे, मगर नेताजी तो स्वयं को हर टीवी अखबार में देखकर आत्ममुग्ध हो रहे थे।

विकास रा काम करें, वनेइज वोट देणो

गाम रा चौरा माथे मनख भेळा व्हेई रिया। थाळी, मादळ री धमक लागी री अर केई मनमौजी नाची रिया। वांक्यो आपरी वच बच में तूतड़ू-तू, तूतड़ू-तू री ऊंची टेर लगाई रिया। जद ढोल रो ढमाको ढब्यो तो घरां जाता चमना बा, भेरा भांबी ने पूछ्यो, भेरा! अठे आज कई रमत्यो हे रे ?

भेरियो धीरे सूं बोल्यो- बा! अबार, वोरां री गोठां चाली री है, जो आपणां गाम में वोट मांगवा कोई नेताजी आई रीया है, वांरा सुवागत में वाजा वाजी रिया है।

धीरे- धीरे चौरा पे मनखां री रेलमपेल लागी गी। आवा वाळां रा रेवड़ आयर पछेड़ो वछाइन बैठ ग्या अर लुगायां दो दो, चार चार टोलां में छेवड़ो काड्यां चंवरा रे कोरे- मेरे जगां ठा कर जमगी। मोट्यार नैनी- नैनी मूछ्यां पे मरोड़ लगावता आ जम्या। मंच माथे फुल्या गालां रो अधेड़ माइक पकड़ बोल रियो हो। अतराक में मंच ऊपरे बैठा पार्टी रा एजेंट हड़बड़ाइन उबा वीया। उणां में सूं नारो देवणीयो जे धुतालचन्दजी !..., हमारा नेता कैसा हो ?, धुतालचन्द जी जैसा हो- बोलवा लागो। लोगां में चेल-पेल होण लागी। थोड़ीक टेक पछे हेंग चुप वेइ ग्या। बूढ़ा डोकरा हाको करियो- अरे अबे तो ढबो! नेताजी काई वादा करी रिया है, म्हाने ई हांभळवां दो।

अतराक में नेता धुतालचंद जी बोलवा लागा- गाम भूतखेड़ा रा हेंग मानेता पंचा अर माया-बायां, आपने ई धुतालचंद रा घणेमान सूं राम राम अर धोक अरज व्हे। अबार आप म्हारा माई बाप हो। ओ सेवक आपरा चरणां रो चाकर अर गाम रो हीज एक बेटो हूं। गणा वरसा बाद म्हने आपरी सेवा रो मौको मल्यो है। म्हारी लाज के तो चारभुजा धणी राखेलो, के आप।

अतराक में नसीम भाई ऊबो वेइन बोल्यो- हकम! कई वरसां ऊ म्हारा गाम रा लोगां ने अर ढांडा- चौंपा ने पीवा रा पाणी ऊं झूंझणो पड़ी रियो है। कूड़ा सूखी ग्या, हैंडपम्प पेळा री सरकार खुदावा रो वादो करियो। अबे आपने वोट दां या वणी खुदा ने याद करां ?

नेता धुतालचंद जी तपाक खुदा सबद ने पकड़ीन बोल्या- नसीम भाई हैंडपम्प नी है, तो यां खुदा, वां खुदा। कहीं भी चाहो तो खुदा, हर जगां खुदा।

भण्या-पढ्या लोग नेताजी रा जवाबऊं हंस पड्या। पण नसीम भाई तो खुदा (ईश्वर) रो नाम सुनर चुप होई बैठ ग्यो।

भीमो पटेल ऊबो वीयो अर खेंकारा करीन बोल्यो- अरे धुतालचंद जी। हागेई हैंडपम्प खुदवा रिया हो या जुमलाबाजी री वातां करी रिया हो। खावो होगन। नेताजी बोल्या- भीमा! थाराई होगन, थारी बाईरा होगन, थारी लुगाई होगन, म्हूं जीती ग्यो, तो गंगा थांरा गाम में वेवेला अर कोई भी जीव तरस्या नी मरेला।

एक पढ़ियो बेरोजगार मोट्यार बोल्यो- नेता वादा तो घणा करे, पण काम एक नीं करें। धुतालचंद तपाक उतर दीदो- वेंडा नेता तो वादा हीइज करें, काम तो वेता आया ज्युहीज वेई।

दूजो मोट्यार पूछो- नेताजी! म्हने थें यो वताओ क नेता अर अभिनेता में कांई फरक व्हे है ? नेताजी उतर दीदो - हुण, जतरे वोट मांगणा व्हे, वतरां टेम मंच ऊपरे नेता नाटक करे, तो अभिनेता केवावे अर जीतवा केड़े नेता होयर आपणां प्रशासनिक नौकरां सूं काम करावे अर खुद बैठो रे। मंच माथे बैठा नेताजी री टोळी ताल्या पीट अर जेकारा लगाया। गाम रा हुणवा वाळा भी हाका लगाय अर जोर जोर सूं हांस्या। एक घंटा तक धुतालचंदजी लोगां ने वादा री व्याळु कराता रिया अर जावा री टेम बोल्या- देखों! म्हे आपसूं हेंग काम करण रा वादा करिया, अबे आप हाथ ऊंचों करीन वादो करो क वोट मनेइज देवोला। भायां वादा सूं तरे तरे रा वाद चाल्या, ज्यान विवाद, वितंडावाद अर बकवाद। पण भायांओ! आज म्हें आपने नुवो वाद देयर जाय र्‌यो हूं, धन्यवाद!

यांन केइन नेताजी मंच सूं नीचे उतर्‌या अर लोग वणा रे पाछे झंडिया हाथां में थाम्या दौड़ता र्‌या। कार में बैठ्या पछे धुतालचंदजी आख्या सूं ओझल वेइग्या अर लोग उड़ता धुळा ने फांकता रिया। पछे गाम रा पुछावता खेमा बा बोल्या- भायां ये नेता तो आवता न जावता रेवे, नवा नवा नेता वादा करता रेवे, पण आपणे तो जो गाम रो विकास रा काम करें , वनेइज वोट देणो है।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
जाट गली, मंदिर मार्ग कांकरोली
संस्थापक श्री द्वारकेश साहित्यकार परिषद

एक पत्र यमराज के नाम

मृत्युदेव यमराज जी,

साष्टांग दंडवत!

हमारे यहां पत्र में 'अत्र कुशलम् तत्रास्तु' लिखने का रिवाज है, जबकि आपको भी ज्ञात है कि आपके होते हुए पृथ्वी पर सर्वत्र कुशलता कैसे हो सकती है। जहां-जहां आपके पांव पड़ते हैं वहां- वहां शोक, रुदन, वेदना के झरने फूट पड़ते हैं। आंसुओं की बाढ़ आ जाती है और सांत्वना के बाग हरे हो जाते हैं। पत्र लेखन मेरी रूचि का विषय है। जब तब मौका मिलने पर मैं कलक्टर से लेकर राष्ट्रपति तक को पत्र लिखता रहता हूं। कभी तारीफ में, कभी सुझाव के लिए तो कभी रस्मी धन्यवाद के लिए। आज अचानक खाली दिमाग बैठे ठाले ख्याल आया कि आपको भी पत्र लिखकर मेरी और धरतीवासियों की भावनाओं से अवगत कराऊं।

मेरी दृष्टि में आप संसार के सबसे ताकतवर देवता हो, फिर भी आश्चर्य है कि आपका कहीं मंदिर नहीं देखा- सुना, न आपकी कहीं पूजा अर्चना देखी। आपकी ताकत का अंदाजा इस बात से लग जाता है कि दुनिया का हर व्यक्ति आपके नाम से ही थर थर कांपता है। आपके आगमन की सूचना या मात्र आशंका से पूरा परिवार हिल जाता है। अत: मेरी प्रथम विनती तो यह है कि आप मृत्युलोक में अपने मंदिर बनवाए और पूजा पाठ प्रारंभ करवाए। इस काम में इवेन्ट मैनेजमेंट व मीडिया की मदद लें तो सफलता का गुणांक उच्च रह सकेगा।

हर जीव जानता व मानता है कि जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु अवश्यंभावी है। मृत्यु शाश्वत है। एक तरह से आप जीवन के नियन्ता है। मौत न होती तो अब तक संसार में लोगों की भारी भीड़ हो जाती। आप जनसंख्या नियंत्रण कर हमारी सरकारों की बड़ी मदद कर रहे हैं। वैसे भी हमारी सरकारें सपने दिखाने के अलावा कुछ कर नहीं पाती। आपका कार्यालय कहां व कैसा है? वहां के नियम- कायदे क्या है? इस बारे में हर धर्म की भिन्न भिन्न राय है। फिर भी एक बात पर सब सहमत है कि मौत के संबंध में तीन रहस्य सदा बने रहते हैं- कब, कहां और कैसे? अर्थात् मृत्यु कब होगी, कहां होगी और कैसे होगी, इन प्रश्नों के उत्तर जानना असंभव है। कुछ ज्योतिषी इस दिशा में अपना ज्ञान, ध्यान व अनुभव रखते हैं, मगर वह भी सौ टका सही नहीं होता और विज्ञान का ज्ञान भी इस दिशा में मौन ही रहता है।

आपके कार्यालय की सबसे अजीब बात यह है कि जीव के जीवन की अवधि निर्धारित नहीं है। कोई मरा हुआ ही पैदा होता है तो कोई चन्द घंटों, दिनों, महीनों का ही मेहमान होता है। ये आपकी कैसी विचित्र व्यवस्था है कि मनुष्य की आय सौ वर्ष तय है, मगर आपकी तलवार कब सिर काट ले जाए, कह नहीं सकते। कुछ लोगों को तो आप सौ वर्ष के बाद भी ले जाना शायद भूल जाते हैं। आपके असामयिक आगमन पर किसी मां की गोद सूनी हो जाती है, किसी की मांग का सिन्दूर मिट जाता है, तो किसी के बुढ़ापे की लाठी टूट जाती है। उन दारुण पलों में सबको दु:खी करके लगता है डॉन की तरह आपको सुख या खुशी मिलती होगी?

यमलोक में एक बार में कितने लोगों का प्रवेश हो सकता है। शायद इसका भी आपके यहां कोई विधान नहीं है। इसीलिए प्राकृतिक आपदाओं में मौत का आंकड़ा सैकड़ों- हजारों में पहुंच जाता है। तब संसार में दु:ख व कष्ट की सुनामी ही आ जाती है। क्या आपके दरबार में कभी इस बिन्दु पर विचार होता है? आपके यहां मानव के प्राण हरण के तरीके भी युगानुकूल बदलते रहते हैं। प्राचीन काल में देवी प्रकोप, युद्ध, तदन्तर रोग, महामारी से लोग काल के गाल में समा जाते थे। आजकल आप एक्सीडेंट, बम ब्लास्ट, आत्महत्या, मर्डर, भगदड़ जैसे अनेक नए तरीके काम में ले रहे हैं। हर तरीके के फिर बहुत से विविध प्रकार संसार भर में प्रचलित है। कभी आप निद्रा से चिरनिद्रा का अनूठा उदाहरण पेश करते हो, तो कभी किसी को तड़पा तड़पा कर उसके प्राण पंखेरु उड़ाते हो। कुछ अजूबे ऐसे भी है, जो अनेक जोखिम भरे करतब करके भी मौत को धोखा देने में कामयाब हो जाते हैं, तब हम दांतों तले अंगुली दबाए देखते ही रह जाते हैं।

आप यमलोक के देवराज है, विश्वविजयी है, आपकी कीर्ति अखंड है। आपका साक्षात स्वरूप विरले ही देख पाए हो, फिरद भी आम तौर पर आपकी छवि एक श्यामवर्णी विराट देहधारी, भैंस पर सवार, मस्त मौला देवता सी जग जाहिर है। आपके हाथों में हथियार, चेहरे पर कुटिल मुस्कान शोभित है। आपके इस अलौकिक रूप की हम पृथ्वीवासी वन्दना करते हैं। हम आपके अस्तित्व के प्रति पूर्ण आस्थावान है और आपके विधान के आगे नतमस्तक है। मगर इतिहास में एक दृष्टांत ऐसा है, जब सत्यवती ने आपको चुनौती दी और आपने उसकी जिद के सामने सत्यवान को लौटा दिया। इस कलियुग में ऐसा कोई चमत्कार आपने फिर से नहीं किया।

संसार में कुछ लोग दिखावटी तौर पर स्वयं को मृत्यु के भय से मुक्त बताते हैं और कहते हैं– होई वही सो राम रचि राखा अर्थात् होता वही है जो मंजूरे खुदा होता है, फिर यमदूत से कैसा डर! वैसे यह सोच क्षणिक व तात्कालिक है। सभी को हर वक्त आपका भय सताता है। क्योंकि आपका कालचक्र बड़ा ही क्रूर है, उसके प्रहार से जीव का प्राणघात होना निश्चित ही है।

यमराज जी! शायद आपके संविधान में समय कुसमय शुभ–अशुभ, शगुन–मुहूर्त आदि शब्दों का कोई स्थान नहीं है, तब ही तो आप किसी को खाते हुए तो कभी नहाते हुए भी अपने पास बुला लेते हो। आप वार– त्यौहार, शादी समारोह से भी परहेज नहीं करते। ऐसे कुसमय आकर हमें विचित्र संकट में डाल देते हो। तब हम एक आंख में आंसू व दूसरी आंख में मुस्कान का अभिनय करने को विवश हो जाते हैं।

यमपुरी के राजन! अभी मुझे आपको बहुत सी ज्ञात अज्ञात बातें कहनी है, पर पत्र काफी लम्बा हो गया है। वैसे भी इन दिनों लिखना– पढ़ना बहुत ही कम हो गया है। सब नेट पर चेटिंग में व्यस्त है। अत: मैं भी पत्र को यहीं समाप्त कर आपकी यश कीर्ति को वन्दन अभिनन्दन करता हूं।

पुनश्च–पत्र लिखने के बाद दिमाग में आया कि यह पत्र आप तक कैसे पहुंचाई ? हमारे संचार साधनों की आपके यमलोक तक कनेक्टीविटी नहीं है। क्यों न इसे व्हाट्सएप व फेसबुक पर वायरल कर दूं, तो कभी न कभी आप तक यह संदेश पहुंच ही जाएगा।

इन्हीं दिव्य कल्पनाओं के साथ।

आपका अपना

पृथ्वीलोक का एक निवासी

प्रकाश तातेड़
ए 102 शुभलाभ अपार्टमेंट,
रूपसागर रोड उदयपुर 313001

AIMS
एक विश्वास,
बेहतर जिंदगी का
ANANTA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES & RESEARCH CENTER
ANANTA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES & RESEARCH CENTRE
अनन्ता अस्पताल
SUPER SPECIALIST FACILITIES:
• CANCER DEPARTMENT
• NEUROLOGY DPARTMENT
• UROLOGY DEPARTMENT
• NEPHROLOGY DEPARTMENT
• BURN, PLASTIC & COSMETIC
• ORTHOPAEDIC & JOINT REPLACEMENT
MULTI SPECIALIST FACILITIES:
• GENERAL MEDICINE
• GENERAL SURGERY
• OBSTETRICS & GYNAECOLOGY
• CHILD & PAEDIATRIC
• ENT
• OPHTHALMOLOGY
• PSYCHOLOGY
• DERMATOLOGY
• DENTAL
• T.B & CHEST
OTHER FACILITIES
• 1.5 TESLA M.R.I
• 64 SLICE C.T. SCAN
• DIALYSIS AMBULANCE
• BLOOD BANK
• ALL LAB TEST
• 2 D ECHO & 4 D SONOGRAPHY
• NICU, PICU, SICU, MICU
• Our ICU with Modern Equipment
We Salute all the Team & Sparkling Gems for their Grueling Endeavor and Grand Success in RUHS 1st Year MBBS Examination 2016-17
1st
Deepika Sharma (83.17%)
Neha Mathur 3rd rank (81.83%)
Komal Sharma 8th rank (76.17%)
Supriya Shekhawat 8th rank (76.17%)
Shivam Sharma 9th rank (76%)
Anannya Narang 10th rank (75.83%)
Suraj Khandelwal 12th rank (75.50%)
Mitali Kothari 13th rank (75.33%)
Sarika Chaudhari 13th rank (75.33%)
Neelam Kumari 16th rank (74.83%)
Vijay Laxmi Yadav 17th rank (74.67%)
13 Out of Top 20 in RUHS are from AIMS & RC.
96 Out of 150 Students passed with 1st Division
Facing Challenges with Strength, Determination & Confidence is What Matters, "You have done it"
Ashok Sikhwal 18th rank (74.50%)
Vidhi Nath 19th rank (74.17%)
Congratulations !!
अनन्ता ग्राम, ने.हा. 8, उदयपुर रोड़, नाथद्वारा – 313202 । फोन : 02953-334000, 97722-78635, 97722-78610
भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना
राजस्थान सरकार के सेवारत कर्मचारियों एवं पेंशनर्स के लिए अधिकृत हॉस्पिटल
TOLL FREE HELP LINE
1800-3000-0023

मेवाड़ के जन नेता थे

आचार्य निरंजननाथ

निरंजन नाथ आचार्य जिस तरह राजनीति को 'अनावृत' करते थे। वह साहस आज की राजनीति में दूर दूर तक नही है। सागर में रहकर मगरमच्छ से बैर करने की जिद और जुनून उनमें था और वह कबीर की तरह अपने आप पर हंसने के आदी थे। व्यवस्था विरोध और सुधार की बैचेनी इनमें थी तथा राजनीति की चक्की में गेहूं के साथ घुन की तरह पिसना उन्हें मंजूर नहीं था। वेदव्यास जी के शब्दों में 'सम्बोधन' में प्रकाशित अंश

आचार्य जी अपने निर्वाचन क्षेत्र में जन जन के प्रतिपात्र थे। राजनीति के कागज़ो में वो भले विधायक थे, पर सच में तो वे राजनीति के विनायक थे। लोग उन्हें प्यार से नरंजन दादा कहकर सम्बोधित करते थे और ऐसा ही प्रेम व्यवहार वे आचार्य जी में पाते भी थे। वे उन आम विधायकों में से नहीं थे, जो मतदान के मौसम में एक औपचारिकता मात्र पूरी करने के लिए अपने चुनाव क्षेत्र के गांव को नक्शे में ढूंढ ढूंढ के पहुंचने का प्रयास करते हैं। वे जब तब अपने निर्वाचन क्षेत्र का दौरा करने का समय निकाल लिया करते थे। यह दौरा राजनीति प्रेरित कम हुआ करता था। एक नितान्त पारिवारिक वातावरण में वे अपने मतदाताओं से बोलते बतियाते थे। किसके यहां शादी हुई, किसके यहां बच्चा हुआ, किसके यहां मायरा जा रहा है, किसके यहां गौना आया है, किसके यहां गमी हुई है, सब उन्हें पता रहता था और यथा संभव ऐसे तमाम अवसरों पर अपने मतदाता के सुख दु:ख में शामिल होते थे।

किसी जाट की पोल में बैठकर छाछ राबड़ी खाने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। किसी चर्मशिल्पी के छप्पर में टूटी खटिया पर भी वे उसी भाव से बैठते थे, जैसे विधानसभा अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठा करते थे। आचार्य जी गांव के बच्चों को बहुत प्यार करते थे।

आचार्य जी का जन्म वर्तमान के राजसमन्द ज़िले के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल कांकरोली के पास मोही गांव में पिता श्री लाल आचार्य और माता भगवती बाई के पुत्र रत्न के रूप में संभ्रान्त ब्राह्मण परिवार में 2 फरवरी 1911 को हुआ। मैट्रिक तक आपकी शिक्षा उदयपुर के महाराणा भूपाल कॉलेज में सम्पन्न हुई तथा इन्टरमीडिएट से एलएलबी तक शिक्षा दीक्षा इन्दौर के प्रसिद्ध होलकर कॉलेज में प्राप्त की। आपका विवाह गुलाबी बाई से हुआ। ट्रेड यूनियनों में आपकी रूचि प्रांरभ से थी। अत: आपने सबसे पहले मेवाड़ रेलवे यूनियन का गठन किया। सन् 1947–48 से 1951 तक आप मेवाड़ के प्रथम मुख्यमंत्री श्री माणिक्यलाल वर्मा के सेक्रेटी रहे। सन् 1952 से 1957 तक आपने वकालत की। इसी बीच सन् 1954 से 57 तक नगर पालिका उदयपुर के चेयरमैन भी रहे। आपके कार्यकाल में जन सुविधा तथा सार्वजनिक निर्माण कार्यो में काफी प्रगति हुई। सन् 1957 में आप राजसमन्द रेलमगरा निर्वाचन क्षेत्र से विधायक चुने गए और विधानसभा के उपाध्यक्ष पद पर आसीन रहे।

1962 से 1965 तक आप गृह तथा शिक्षा मंत्रालय में उप मंत्री रहे। सन् 1965 से 1967 तक आपने गृहमंत्री जैसा महत्वपूर्ण पद संभाला। 1967 में आपने मावली निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ा और विधानसभा के अध्यक्ष मनोनीत हुए। इस पद पर आपने अपनी कुशल संगठन एवं नेतृत्व शक्ति का परिचय सन् 1972 तक दिया। सन् 1972 में राजनीति के खिलाड़ियों ने यह तय किया कि आचार्य जी चूकिं विधानसभा अध्यक्ष पद पर रह चुके हैं। अत:उनके विरोध में कोई भी उम्मीदवार खड़ा नहीं किया जाए, किन्तु कुछ निहित स्वार्थ वाले लोगों ने इस निर्णय की अवमानना करते हुए अपने उम्मीदवार खड़े कर दिए, तो आचार्य जी ने निर्दलीय उम्मीदवार की हैसियत से चुनाव लड़ने का फैसला किया और शायद 1972 के माहौल में हिन्दुस्तान भर में यह पहला हादसा हुआ कि एक निर्दलीय उम्मीदवार के हाथों सभी पार्टियों के उम्मीदवार की जमानत जब्त हो गई। ये आचार्य जी की लोकप्रियता की अभूतपूर्व मिसाल थी। जनता जनार्दन ने अपने अपने सेवाभावी और सुख दु:ख के सच्चे साथी को हाथों हाथ पुरस्कृत कर दिया था और विरोधी देखते रह गए थे, पर ये भी सच है कि आचार्य जी के भावुक मन पर राजनीति के इस गन्दे खेल से बड़ा आघात लगा था।

आचार्य जी का एक दूसरा पक्ष है साहित्य का। जब आप विधानसभा के उपाध्यक्ष और तथा शिक्षा मंत्री रहे, तो आपने 'विद्यालयो से कहा' शीर्षक से पुस्तक लिखी। सत्ता में रहते हुए तंत्र की कमजोरियों को पुस्तक में बड़ी निर्भयता से चित्रित किया। यह पुस्तक बड़ी चर्चा का विषय रही और परेशान होकर सरकार ने कुछ समय के लिए प्रतिबंधित करने का निर्णय लिया।

राजनीति की चक्की में आपकी दूसरी बड़ी पुस्तक थी, जिसने राजनैतिक दांव पेंच की बखिया उधेंड़ कर रख दी। यह पुस्तक राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरूस्कृत भी हुई, किन्तु चूकिं आचार्य जी 1967 से 1969 तक अकादमी के अध्यक्ष थे। अत: आपने यह पुरूस्कार स्वीकार न करके एक स्वस्थ परम्परा का निर्वाह किया। डायरी लेखन में आचार्य जी बड़े नियमित थे। 1947 से आपने डायरी लिखना शुरु और मृत्यु तक लिखते रहे। यात्रा के ओर छोर और विस्मृति के पंख आपके गद्य गीतों के संकलन है। 'आस्ट्रेलिया के आंचल में' आपकी आस्ट्रेलिया यात्रा के संस्मरण है। धरती के गीत तथा लघु आकारीय काव्य कृतियां आपके कवित्व का परिचय है।

आपने समय की श्रेष्ठ पत्रिका धर्म युग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, कादम्बिनी आदि में आपकी रचनाएं प्रकाशित होती रहती थी। आचार्य जी एक प्रबुद्ध तेज तर्रार और चतुर राजनेता व साहित्यकार थे।

उनकी कलम का जादू अच्छे अच्छो के सर चढ़कर बोलता था। आपातकाल से पहले 'धर्मयुग' में प्रकाशित उनके एक लेख से वे पार्टी नेतृत्व की आंखों की किरकिरी बन गए थे। यही कारण था की अगली विधानसभा में उन्हें पार्टी से टिकट नहीं दिया। आचार्य जी ने मावली विधानसभा से निर्दलीय चुनाव लड़ा और विजयी हुए। आचार्य जी सार्वजनिक जीवन में जितने अनुशासन प्रिय थे, उतने ही पारिवारिक जीवन में नियम से चलने वाले थे। वे अपने बच्चों को कहते थे, 'खुद काबिल बनो'। ज़िन्दगी में वो दिन कभी ना आए जब तुम्हारी सिफारिश करनी पड़े। उनका देश प्रेम भाषणी नहीं था। 1965 में युद्ध के मंडराते बादलो में उन्होंने अपने सबसे बड़े पुत्र देशबंधु को राष्ट्र की सेवा में सेना को सौंप दिया।

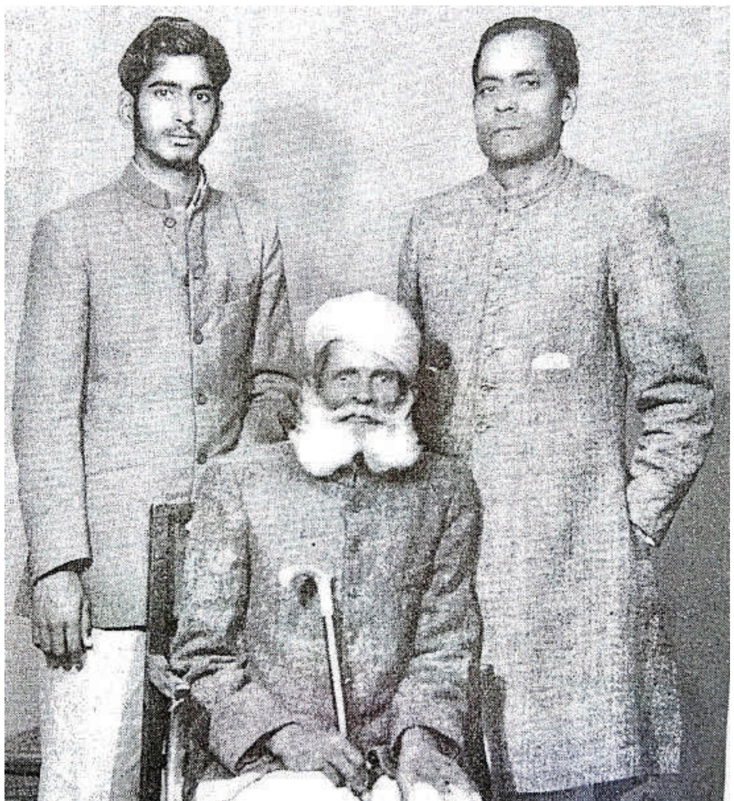
आचार्य निरंजननाथ अपने पिता श्रीलालजी आचार्य व पुत्र कर्नल देशबंधु आचार्य के साथ

आदरणीय डॉ. भगवती लाल व्यास के शब्दों में 'सम्बोधन' में प्रकाशित आलेखों के अंश बकोल साभार पेश कर रहा हूं-

वरिष्ठ साहित्यकार अफज़ल खां जी अफज़ल ने बताया कि एक बार मैं और कमरजी मेवाड़ी जयपुर आचार्य साहब से मिलने गए, तब जयपुर में डॉक्टर हड़ताल पर गए हुए थे, तब मरीज़ो का हाल जानने वे हमें भी साथ ले अस्पताल पहुंच गए और उन्होनें डाक्टरों को समझाना चालू कर दिया और कहा लो ये 500 रुपए। तुम्हारे आन्दोलन के सहयोग के लिए, तुम्हारी मांगे कुछ कुछ वाजिब भी है। संघर्ष करो, पर इन मरीजो ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है। इनको तो देखो दवाइयां लिखो, तुम्हारा झगड़ा सरकार से है, अस्पताल मत जाओ, इस फुटपाथ पर बैठो और आम मरीज़ो की तकलीफ दूर करो और सचमुच सभी डॉक्टर

बाहर ही मरीज़ो को देखने लग गए। ऐसे अद्भुत थे, हमारे आचार्य जी। अब कहां ऐसे व्यक्तित्व है। विचार और व्यवहार में निहायत सादगी का उदाहरण इसी बात से पता चलता है कि 1965 में गृह मंत्री रहते हुए आपने सरकारी वाहन का उपयोग बंद कर दिया। साइकिल पर मंत्रालय आने जाने लगे। कमरे में पाश्चात्य ढ़ग के फर्नीचर के स्थान पर गद्दे मोड़ लगवा दिए। इस घटना से सुविधा परस्त मंत्रियों के खेमे में खलबली मच गई।

कमर जी मेवाड़ी ने जिक्र किया कि आचार्य जी साहित्यकार के साथ साहित्य सेवी भी थे। सम्बोधन पत्रिका के संकट मोचन बन कर मदद की। बात उन दिनों की, जब वो विधानसभा अध्यक्ष थे। वे जब भी राजसमन्द आते कुर्बान भाई के पेट्रोल पम्प (जलचक्की) पर उनकी बैठक जमती। यही पर सभी की समस्याओं का समाधान और आगे की रणनीति बनती। मेवाड़ी जी ने आचार्य जी से सम्बोधन पत्रिका का जिक्र करते हुए कहा कि सम्बोधन पत्रिका पर कर्ज बढ़ता जा रहा है और अगला अंक निकालना भी मुश्किल है। हालत यह कि मेरी 100 रुपए की तनख्वाह में घर गुजारे के साथ जेब से सम्बोधन के लिए पैसे निकालना संभव नहीं है। मैं कर्ज में डूब चुका हूं, तब उन्होनें मुझे जयपुर बुलाया और लिफाफे में 500 रुपए व सरकारी विभाग के विज्ञापन छपवाए, जिससे अगला अंक प्रकाशित हुआ। उन विज्ञापन से आए रुपयो से पुराना कर्ज भी उतर गया। अगर उस वक्त वो मदद नहीं करते तो शायद सम्बोधन पत्रिका आज 50 साल का सफर तय नहीं कर पाती।

आचार्य जी क्योंकि राजनीति के शिखर पर चले गए। शायद साहित्य की दुनिया उन्हें भूल गई। राजस्थान में आज भी 'आचार्य निरंजन नाथ सम्मान' की मशाल उनके आदर्श पुत्र कर्नल देशबन्धु आचार्य और उनके पुराने मित्र कमर मेवाड़ी ही अनवरत साधे हुए हैं और हर वर्ष राजसमन्द में साहित्य सम्मान का आयोजन करते हैं और हिन्दुस्तान के श्रेष्ठ साहित्यकारों का चयन कर 51 हजार रुपए पुरस्कार स्वरूप देते हैं।

सम्बोधन पत्रिका ने 2011 के अक्टूबर के अंक में आचार्य साहब के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आचार्य निरंजननाथ स्मृति में प्रकाशित किया। आचार्य जी के राजनीति में भैरोसिंह जी शेखावत, परसरामजी मदेरणा, प्रो. केदारनाथजी शर्मा उनके घनिष्ठ मित्रो में थे। 1972 के बाद राजनीति से उन्हें विरक्ति होने लगी थी। अपने छोटे पुत्र की दुर्घटना में मृत्यु होने के बाद वे वैरागी से हो चले थे। अक्सर वो उनका रचा भजन गाया करते थे–

मोह माया ने छोड़ क्रोध ने तज रे।
थारो आया अंतिम काल हरि ने भज रे।।

आध्यात्म में उनकी रूचि ताउम्र रही। श्री भगवत् गीता में गहरी आस्था थी। आधात्मिक मठ चलाने वालो में से उन्होंने महेश योगी, टाटवाले बाबा, ब्रह्मा कुमारी आश्रम को उन्होंने नजदीक से देखा। गायत्री वाले आचार्य श्री राम शर्मा से भी वे प्रभावित रहे। वैसे समय मिलने पर वे आचार्य तुलसी और आचार्य रजनीश से भी चर्चा करने जाते रहते थे। आपकी अन्तिम इच्छा थी कि जीवन के अन्तिम अवस्था के दिन बावजी चतरसिंह जी की साधना स्थली नौवा में ईश चिन्तन करते हुए व्यतीत करें। आचार्य साहब का सम्पूर्ण जीवन निष्कलंक रहा।

पं. जवाहरलाल नेहरु से एक किसान मुखिया की भेंट करते आचार्य निरंजननाथ।

उस समय भी उनका कोई सानी नही था और आज भी नहीं है। राजस्थान सरकार में उनका पूरा दब दबा था। माया और ममता से आचार्य साहब सदा दूर रहे, जिस श्वेत चादर को उन्होंने देश सेवा के लिए धारण किया। उसे बेदाग रखा और 64 वर्ष की आयु में मेवाड़ का ये लाडला जननायक बेटा 6 अप्रैल 1975 को देहत्याग संसार सागर को अलविदा कह गया।

सो चादर सुर नर मुनि ओढ़,
ओढ़ के मेली कीन्ही चदरिया,
दास कबीर से जतन से ओढ़ी,
ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया।।

इस माटी के लाल के लिए कबीर दास जी का ये दोहा उचित चरितार्थ होता है। इस महान आत्मा को मेवाड़ की सदियां याद रखेगी।

प्रस्तुति
सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली
राजसमंद 94146-21730

सबक

सच में यह आश्चर्यजनक ही था। सभी को लग रहा था। सबसे पहले उसकी पत्नी ने महसूस किया। श्रीमती जी ने निगाहों ही निगाहों में बच्चों से भी इस बात की तस्दीक की। मां बाप को भी लगा कि हां जब से यह आया है काफी अलग है। हद तो यह हुई कि विकास के कलीग्स ने ऑफिस से फोन किया और विकास के स्वास्थ्य के बारे में जानने का प्रयास किया। सेक्रेटरी ने तो सीधे ही पूछ लिया भाभी क्या विकास भैया कुछ बीमार है या कोई हादसा हुआ है।

अब यह बात पक्की थी। शक की कोई गुंजाइश ही नहीं थी कि विकास बहुत बदल गया है, पर ऐसा क्या हुआ? ऐसा क्या हुआ कि विकास जैसा अकडू इतना बदल गया है। विकास के स्वभाव का बदलना सभी को भा रहा था, पर कारण समझ से परे था। आखिर पत्नी ने कारण जानने की ठान ही ली।

सोते समय पूछा जब से मेरे पीहर से लौटे हो बहुत बदल गए हो?

नहीं ऐसा तो कुछ भी नहीं, विकास ने कहा।

ऐसा क्या हुआ? मुझे तो कुछ अजीब नहीं लगा वहां। उसने थोड़ा कुरेदा। अरे नहीं सच में कुछ भी नहीं। तुम तो ऐसे ही, विकास ने टालने की कोशिश की। देखो! मुझसे कुछ छुपाओ मत। तुम्हें मेरी कसम, उसके स्वर में नाराजगी के साथ एक रुंआसापन भी था।

विकास कुछ नहीं बोला तो पत्नी भी मुंह फेर कर रूठ गई। रात के सन्नाटे में पत्नी का सिसकना विकास से बर्दाश्त नहीं हुआ। बोला तुम औरतें जब देखो इसी तरह ब्लैकमेल करती हो, जब मैं कह रहा हू, तो... । अब नहीं मानती तो सुनो, पर वादा तुम्हें भी करना होगा कि इस बात पर ना तो हंसोगी न ही इसका इशु बनाओगी।

वह मौन रही पर पलट कर विकास का चेहरा देखने लगी। जैकी, उसे तो तुम जानती ही हो ना? सब उसी का किया धरा है।

जैकी का! आश्चर्य से उसके मुंह से निकल गया। उस बेचारे ने क्या किया? वो तो... । सच है, उस बेचारे ने तो कुछ भी नहीं किया, पर हां मुझे जिंदगी का एक सबक जरूर मिल गया। उसने भला क्या सबक दे दिया तुम्हें? उसने आश्चर्य से पूछा।

तुम्हें याद ही होगा कि साले साहब और हम लगभग साथ साथ ही तुम्हारे पीहर पहुंचे थे और मेरी ही तरह जैकी भी पहली बार ही तुम्हारे पीहर आया था अर्थात तुम्हारे पीहर वालों के लिए जैकी और मैं दोनों ही नव आगंतुक थे।

हां तो इससे क्या सबक मिला? उसने पूछा।

देखो मुझे लगता था कि मैंने जिंदगी में बहुत कुछ किया है, बहुत कुछ कमाया है और बहुत सफलताएं प्राप्त की है। मुझे हमेशा से लगता था कि लोगों को मेरी इज्जत करनी चाहिए। यह बात एक तरह से मुझमें इतना घर कर गई थी कि इसने मेरे स्वभाव को ही बदल कर रख दिया। अब जब मैं पहली बार अपने ससुराल गया तो मुझे लगा कि वहां पर भी मेरी बहुत ज्यादा इज्जत होगी। एक तो जमाई हूं और ऊपर से ऐसा अचीवर, महत्व तो मिलेगा ही।

लेकिन जब वहां पहुंचा तब मैंने पाया कि सबसे ज्यादा इज्जत तो जैकी की है और लगा कि वही घर में सबसे महत्वपूर्ण भी है। वह हर जगह आ जा सकता है। वहां भी जहां शायद मैं कभी ना जा सकूं। वह सबका चहेता है। उसे कब किस चीज की आवश्यकता है, ये जानने को सभी उत्सुक थे। सभी उसका बहुत ध्यान रख रहे थे। इतना कि मैं अपने आपको वहां उपेक्षित पाता था और हद तो तब हुई जब वह जोर से भौंकते हुए मुझ पर चढ़ आया और मैं नीचे गिर गया। उसके दोनों पंजे मेरे सीने पर थे और साले मुझसे कह रहे थे कि जीजाजी जरूर आपने ही कुछ छेड़खानी की होगी, वरना जैकी तो ऐसा कभी नहीं करता और तुम्हारे परिवार वालों की प्रश्नांकित निगाहें मेरी और उठ गई थी, तब मुझे एहसास हो गया कि जीवन में जो मान सम्मान महत्व मिलता है। वह ईश्वर की कृपा से ही मिलता है। वो चाहे तो जमाई की कद्र कुत्ते जैसी कर दें और कुत्ते की जमाई से भी ज्यादा। बस उसी दम मेरे अचीवर होने का सारा घमंड दूर हो गया और मुझे तुलसीदास जी की चौपाई याद आ गई।

सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहे हूं मुनिनाथ।
हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश, अपयश विधि हाथ।।

अब तुम लोग आंखें खुलने को बदलाव मान रहे हो, तो मैं क्या कहूं? पत्नी के चेहरे पर संतोष उभरा, पर क्षोभ और विचित्रता के भाव भी आते और चले जाते थे।

परितोष पालीवाल
साहित्यकार कांकरोली

राजस्थानी दोहा

फरको कतरो दृष्टि को, सकैन सांची टाळ।
बोट दीखता आपणा, घी दूजा कै थाळ।।
आज अठी तड़कै उठी, परसूं कांई भरोस।
खाया पीया भाग ल्या, दे पातळ नै दोस।।
दूजो ले ग्यो टिकट जद, इक झटका सूं त्याग।
छोड़ चींचड़ा ज्यूं गिया, सारा चमचा भाग।।
पांच साल बहरा रिया, आंख्यां सूं बी आंध।
वांसूं जनता आखती, टूट सबर को बांध।।
घणू अचम्बो हो रियो, टिकटां की तकरार।
ऊंट ब्हिया अर गाडरां, उतरी पैली पार।।
जी हांडी चमचा धंस्या, ऊंको माल खलास।
खाली होई छोडता, दूजी करी तलास।।
सम्मेलण कर बण गिया, इक जाति का खास।
रैसी सब का बणर वै, कियां करां बसवास।।
ज्यांनै जनता की सुणी, पूरा पांचूं साल।
निस्चै फेरूं जीतबो, परजा करै निहाल।।

जयसिंह आशावत
मो. 9414963266

चुनाव आए चुनाव आए

कौन खड़ा हुआ, किसको टिकट मिला,
कौन रहा अभागा, किसका भाग्य खिला।

कितने कयास लगे, कितने गठबंधन हुए,
कौन माना कौन नाराज, कितने दल बदल हुए।
अफवाहो का दौर, अनुभवों का तकाजा,
खबरें आती जाती, क्या बासी क्या ताजा।

कितने समर्थन में, कितनों ने किया विरोध
कौन लड़ेगा पार्टी से, और कौन निर्विरोध।
आखिर जारी टिकट, जश्न हंगामों का खेल,
कहीं पर अफरातफरी, कहीं पर रेलमपेल।

तंत्र लगा चुनाव में, हो शांतिपूर्ण ये मतदान,
तुम भी तत्पर हो लो, वोट अमूल्य करो मतदान।
जाने समझे परखें, कौन सबका हितकारी
लोकतंत्र की जय हो, सुनिश्चित हो जीत हमारी।।

कमलेश जोशी
कांकरोली, 99507-41177

कार्यकर्ता और राजनीति

अच्छा भला इंसान कैसे पंगु बनता है,
पार्टियों में ऐसे ही कार्यकर्ता बनता है।
मेहनत करके पार्टी में छा जाते हैं,
जितना तपते हैं उतने निखर पाते हैं,
चापलूसी करके ही चमचा बनता है,
पार्टियों में ऐसे ही कार्यकर्ता बनता है।

जितना ज्यादा काम करके दिखाते हैं,
उतना नेताजी के नज़दीक आते हैं,
जो पार्टी का दु:ख हर्ता बनता है,
पार्टियों में ऐसे ही कार्यकर्ता बनता है।

कोल्हू के बैल जैसे चक्कर लगाता है,
बिना खाए सारे काम किए जाता है,
परेशानी का सबब खुद ही बनता है,
पार्टियों में ऐसे ही कार्यकर्ता बनता हैं।
काम निकलते ही फटकार देते हैं,
सभी पार्टी वाले बस दुदकार देते हैं,
कोसता इनको और भूखा मरता है,
पार्टियों में ऐसे ही कार्यकर्ता बनता हैं।

कार्यकर्ता कभी नेता नहीं होता है,
पार्टी ढ़ोता आया है और ढ़ोता है,
गुमनामी में जो रोज़ जीता मरता है
पार्टियों में ऐसे ही कार्यकर्ता बनता हैं।

वोटर से वो सीधे सम्पर्क बनाता है
कार्यकर्ता ही जिताता और हरवाता है
इनसे ही खेल बिगड़ता व बनता है
पार्टियों में ऐसे ही कार्यकर्ता बनता हैं।

गहरे मंथन

जोर शोर से पार्टियों के दरबार लग रहे हैं
गहरे मंथन के साथ हर पैतरा चला रहे हैं।
गहराईयों से हर मद टटोला जा रहा है
पुराने- धुराने कागजों को खोला जा रहा है
हर गुत्थी को सुलझाने में लग रहे हैं
गहरे मंथन के साथ हर पैतरा चला रहे हैं।
व्यक्ति, घर, हवेली के दस्तावेज बन रहे हैं,
कौन अपने हैं, पराये मंथन चल रहे हैं
सूची अनुसार भीतरघात कर रहे हैं
गहरे मंथन के साथ हर पैतरा चला रहे हैं।
हवा पक्ष में करने की युक्ति चला रहे हैं
युवाओं को पार्टी के अंदर मिला रहे हैं
पुराने और नयों में जोश भर रहे हैं
गहरे मंथन के साथ हर पैतरा चला रहे हैं।
वो एंटी इन्कमबेंसी का तोड़ ढूंढ रहे हैं
ये कद्दावरों में फंस के रास्ता ढूंढ रहे हैं
जैसा किया उसके फल मिल रहे हैं
गहरे मंथन के साथ हर पैतरा चला रहे हैं।
ऊंच नीच जाति धर्म में दोनों बांट रहे हैं
सारे हथकंडे लगाके अपने छांट रहे हैं
दिखाने को छोटे घरों पे जीमण चल रहे हैं
गहरे मंथन के साथ हर पैतरा चला रहे हैं।

वीएस चव्हान,
पूर्व अभियंता जेके टायर इंडस्ट्रीज कांकरोली

क्या करूँ

क्या करूँ,
मौन रहूं या बोल दूँ,
नेताओं की ईमानदारी के,
सारे राज खोल दूँ,
क्या करूँ,
मौन रहूं या बोल दूँ।।

वोट लेने तक,
झुक जाते हैं पैरो में।
जीत जाए, तो फिर कहते,
कौन है भाई! बोल तू।।
क्या करूँ,
मौन रहूं या बोल दूँ।।

नेता गुंडे बन जाते,
अपना ये प्रकोप दिखाते।
इस गन्दी राजनीति को,
आंख बन्द कर तोल दूँ।।
क्या करूँ,
मौन रहूं या बोल दूँ।।

गाड़ी, बंगला और दौलत,
ऐशो आराम की जिंदगी है।
जनता के खाने के लाले और
कहे, 10 पैसा सस्ता पेट्रोल दूँ।।
क्या करूँ,
मौन रहूं या बोल दूँ।।

रिश्वतखोरी, गुण्डागर्दी,
दिनदहाड़े करते हैं।
चुटकियों में फैसले होते,
और जज को बोलते,
तेरी कीमत बोल तू।
क्या करूँ,
मौन रहूं या बोल दूँ।।

बलात्कारी खुलेआम घूम रहे,
देशद्रोही नेता बन रहे।
लाखों देशवासियों को कहते,
भारत मां की जय मत बोल तू।
क्या करूँ,
मौन रहूं या बोल दूँ।।

तरह- तरह के घोटाले हो रहे,
सैकड़ों की चीज, हजारों में ले रहे।
महंगाई ऐसे तो कम नहीं होगी
जनता, दिल की बात बोल तू।
क्या करूँ,
मौन रहूं या बोल दूँ।।

भेड़चाल से सरकार बन रही,
वोट हमारा अधिकार है।
नेता कह रहे, मुझे ही वोट देना,
ले पहले, बोतल खोल तू।।
क्या करूँ,
मौन रहूं या बोल दूँ।।

भ्रष्ट नेताओं ने ही बिगाड़ा,
हमारे भारत का स्वरूप।
आज सब अंधभक्त हो रहे,
जसवंत खुल कर बोल तू।।
क्या करूँ,
मौन रहूं या बोल दूँ।।
नेताओं की ईमानदारी के
सारे राज खोल दूँ।
कच्चे चिट्ठे खोल दूँ।।

कवि जसवंतलाल खटीक
देवगढ़

वोटर और गधा

एक नेता वोट मांगने के लिए एक बूढ़े आदमी के पास गया और उनको 1000 रुपए पकड़ाते हुए कहा, बाबजी, इस बार वोट मुझे दें।

बाबाजी ने कहा, बेटा मुझे पैसे नहीं चाहिए, पर तुम्हें वोट चाहिए तो एक गधा खरीद के ला दो। नेता को वोट चाहिए था, वो गधा ढूंढने निकला, मगर कहीं भी 20,000 रुपए से कम क़ीमत पर कोई गधा नहीं मिला। तो वापस आकर बाबाजी से बोला, मुनासिब क़ीमत पर कोई गधा नहीं मिला। कम से कम 20,000 रुपए का एक गधा है। इसलिए मैं आपको गधा तो नहीं दे सकता, पर 1000 रुपए दे सकता हूं। बाबाजी ने कहा, बेटा और शर्मिंदा ना करो।

तुम्हारी नज़र में मेरी कीमत गधे से भी कम हैं। जब गधा 20,000 रुपए से कम में नहीं बिका, तो मैं तो इंसान हूं, 1000 रुपए में कैसे बिक सकता हूं ?

राजनेता और उनकी फितरत

वादे बहुत करते हैं, पर कहां उसे ये निभाना जानते हैं,
बस पुराने मुद्दों पर ये तो नया कलेवर चढ़ाना जानते हैं।
चुनाव आते हैं तो दिखता है इक नया ही रूप इनका,
जनता बिचारी भोली हैं, उसे ये मूर्ख बनाना जानते हैं।

जब भी मन चाहे, जाती धर्म की आग लगाना जानते हैं,
उस आग में जनता के अरमानों को जलाना जानते हैं।
मर भी जाए,कट भी जाए अगर कोई, तो इन्हें क्या,
लाशों के ढेर पर भी अपनी राजनीति चमकाना जानते हैं।

रोते गरीबों की भूख पर भी, रोटियां पकाना जानते हैं,
आंखों में हजारों ख्वाब देकर, उनको मिटाना जानते हैं।
तकलीफे जितनी बड़ी हो,उतना बढ़ता है कारोबार इनका,
क्योंकि जनता की तकलीफों से भी, ये कमाना जानते हैं।

अपना बनाकर धोखे से, मीठा खंजर चलाना जानते हैं,
राह में आये हर इक शख्स को, राह से हटाना जानते हैं।
समझना बड़ा ही मुश्किल है, इनकी गजब सी चालों को,
अपनी कुटिल काया पर, साधु का भेष चढ़ाना जानते हैं।

झूठी झूठी बातें करके हमे मुद्दों से भटकाना जानते हैं,
कभी मन्दिर तो कभी मस्जिद पर लड़वाना जानते हैं।
नेताओं पे भरोसा बड़ी सोच समझ कर करना 'प्रांश'
ये लोग बड़े बड़े वादे करके, उसे भूल जाना जानते हैं।

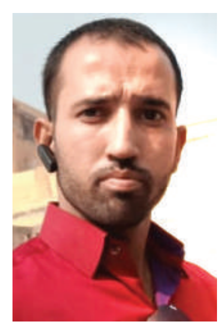

प्रकाश जांगिड 'प्रांश'
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली

करना मतदान सोच समझ कर

चुनाव आये चुनाव आये, मतदाताओं के मन में भाये
नेता अब पकड़ में आये, पहाड़ के नीचे अब ऊंट जाये,
नेताओं को जनता भाये, बार बार मतदाता के घर जाये,
जनता को विश्वास दिलाये, मनुहार करें ओर उन्हें मनाये।

थड़ी पान की चौराहों पर, सजने लगी महफिल रातभर,
होने लगी बांते दुकान पर उन सब नेताओं की उतारकर,
पांच साल का काम देखकर, हर तरीके से आंकलन कर
नेता काटे सबके चक्कर, करना मतदान सोच समझकर,

मतदाता की बात मानकर, करने लगा खुशामद जानकर,
आप कहोगे वो काम कर, जनता सेवा करूं जिंदगीभर,
सुख दु:ख में साथ रहकर, काम करूं मैं सेवा समझकर,
तुम सब हो अब मेरे यार, मिलकर करो मेरी ये नैया पार।

मुझे कोई भी काम बताओ, सब मिलकर मुझे जिताओ,
इस क्षेत्र का विकास कराओ, अपनो को तुम समझाओ,
भारी मतो से विजय बनाओ, जिताकर मुझे मंत्री बनाओ,
मुझे ही अपना बनाओ, लोकतन्त्र का तुम फर्ज निभाओ।

पूरण शर्मा
स्वस्तिक सिनेमा के पास
कांकरोली

अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।

स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-

सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

बकरा

'पति' यह कुर्बानी का वह बकरा है, जो कटने के लिए ही इस धरती पर अवतरित हुआ है। इसके कटने की कोई निश्चित तिथि या तारीख नही होती। शादी के बाद से यह हर दिन कटता है, हर बार कटने के बाद मुस्कुराते रहना इसकी नियति है। यह बेहद शर्मिला, संकोची, गरीब, असहाय, नादान, लाचार, अबोध प्राणी होता है। यह प्राय: संसार के हर कोने में, हर घर में पाया जाता है। एक सर्वे के अनुसार यह इस ब्रह्मांड का सबसे उपेक्षित प्राणी है।

महिलाओं के लिए महिला सुरक्षा अधिनियम, पशुओं के लिए वन्य जीव संरक्षण अधिनियम एवं अन्य वर्गों के लिए कई सारे कानून बने हुए है। इस गरीब के संरक्षण के लिए कोई कानून नहीं है, यह अपना जीवन भगवान भरोसे ही जीता है।

एक दिन अवकाश के दिन सुबह मैं पलंग पर थोड़ा टेढा होकर यानी आधी लेटी और आधी बैठी हुई मुद्रा में अखबार पढ़ रहा था। बिल्कुल एक दिन के शहंशाह वाली फीलिंग थी, थोड़ी देर में पत्नीजी आई और बोली– उठो उठो उठो...। उनके उठो-उठो कहने से मुझे एकाएक मोदीजी याद आ गए। जब संसद में राहुलजी ने मोदीजी को कहा था– उठो उठो और फिर वो मोदीजी के गले लग गये थे। मैंने सोचा शायद इसी तरह का इनका कोई कार्यक्रम दिखता है, तुरंत प्रभाव से मैं उठ गया। दो मिनिट तक खड़ा रहा, लेकिन ऐसी किसी भी गतिविधि होने के आसार दूर दूर तक दिखाई नहीं दिए और ज्यादा पूछे जाने पर छीले जाने का खतरा बरकरार था। दरअसल उन्हें बिस्तर पर बिछी चादर झाड़नी या फटकारनी थी, इसलिए शहंशाह को उठाया। खैर! मैं अख़बार लिए दूसरे कमरे में मसनद के सहारे आड़ा टिक कर बैठ गया। शहंशाह वाली फीलिंग वापिस जागृत हो गई। अभी दस मिनिट ही बीते थे। अखबार का एक पृष्ट ही पढ़ा था कि बेगम आ गई (अब शहंशाह की पत्नी बेगम ही हुई न)। फिर से वही उठो– उठो...। अब तो शहंशाह वाली फीलिंग फुर्र हो गई, बिल्कुल निखट्टू वाली फीलिंग मन मे जागृत हो आई।

इन पत्नियों का बस चले तो छुट्टी के दिन पतियों को बड़ी सी अलमारी में ताक पर बिठा देवें। यही बैठे रहो, खबरदार जो पैर नीचे रखा तो, काम ही नहीं करने देते। बीच बीच में आते रहते हो। यही बैठे रहना, खाना यहीं रख जाऊंगी और हां टाईम पास करने के लिए आपका मोबाईल रख जाती हूं, ताकि अपने जैसे निखट्टू फेसबुकिया दोस्तों से चेट करते रहना।

हम असहाय पति लोग देश के दो प्रतिष्ठित और ताकतवर लोग मोदीजी और राहुलजी की तरफ उम्मीद भरी निगाहों से देख रहे है कि शायद ये लोग हमारी मदद के लिए कोई कानून लाए।

किसी भी क्रिकेट मैच में पिच की प्रकृति मैच के दौरान एक जैसी नहीं रहती। कब तेज गेंदबाजों के अनुकूल रहेंगी, कब गेंद स्पिन ज्यादा करेगी। बल्लेबाजों के अनुकूल कब रहेंगी। बस इसका अनुमान लगा सकते हैं, भविष्यवाणी नहीं कर सकते। यानी कि समय गुजरने के बाद पिच की प्रकृति बदलती रहती है। ऐसा ही शादीशुदा जिंदगी में होता है। समय के साथ जिंदगी कितने रूप बदलती है, पता ही नहीं चलता। मोदीजी तो शादीशुदा जिंदगी की पिच पर कुछ वक्त गुजारने के बाद निकल लिए। इसलिए उन्हें शादीशुदा जिंदगी की पिच की बदलती प्रकृति का अंदाजा नहीं है। राहुलजी की तो मैदान में उतरने की बात छोड़िए, वो तो अभी बल्ला पकड़ना ही सीख रहे हैं। ऐसे में शादीशुदा जिंदगी का इनको कोई खास अनुभव है नहीं। तो इनसे हम पतियों के लिए मदद की कोई उम्मीद लगानी बेकार ही है। हम पति लोग पलक झपकते ही, चुटकियों में एकब नामदार से कामदार बना दिये जाते हैं। पता ही नहीं चलता...। मोदीजी और राहुलजी को ऐसा सौभाग्य नसीब कहा?

हम गरीबों के संरक्षण के लिए कोई भी नेता या अभिनेता आगे नहीं आता, जबकि ये भी इसी श्रेणी में आते हैं। हम पति लोग तो अपना मुंह सिर्फ खाना खाने और पानी पीने के लिए ही खोलते हैं। हम पतियों की बेबसी भरी जिंदगी में अनुप जलोटा इन दिनों आशा की नई किरण बनकर उभरे हैं। 'ऐसी लागी लगन...' गाते गाते जसलीन से ऐसी लगन लगाई कि दुनियां भौचक्की रह गईं। उनके किए कारनामे से दिल बाग बाग है। हम प्रौढ़ावस्था की आयु में पहुंच चुके युवाओं के लिए वह एक आदर्श पुरुष बनकर इस संसार में अवतरित हुए है।

50 वर्ष की आयु पार कर चुके हम चिर युवाओं की सुषुप्त पड़ी शिराओ में उत्साह, उमंग, रोमांच, अभिलाषाओं के नवरक्त का द्रुत गति से संचार हो रहा है। हम पतियों की सुस्त पड़ी कामनाएं, आकांक्षाए, इच्छाएं, तमन्नाएं वापिस जागृत हो चली है।

दरअसल हर पति मन ही मन चाहता है कि उसकी जिंदगी में भी एक जसलीन हो। बस जमाने और घर वालो को खबर ना हो। दिल तो चाहता है जिंदगी भर घंटी तो बजाता रहूं। बस गले में बांधनी ना पड़े। अनूपजी के इस अद्भुत कारनामे से हम पतियों की धमनियों में एक नया जोश छलांगे मार रहा है। हर पति अंदर से थोड़ा बहुत बेईमान तो होता ही है। बस अपने अपने मौके की बात है। अनुप जलोटाजी को जसलीन मिल गई, तो उन्होंने मौका ताड़ लिया। बाकी हम सब पति सत्यवादी पुरुष बनकर उनकी निन्दा करते रहे। ये तो हमे मौका नहीं मिला, बाकी हम सब भी मौके की तलाश में है। कभी दांव नहीं चलता तो कभी हिम्मत नहीं होती। अपनी अपनी किस्मत की बात है। हमें मिल जाती तो हम भी यहीं कहते हर आदमी की अपनी व्यक्तिगत जिंदगी होती है। दूसरे को उसके बारे में बोलने का अधिकार नहीं है। हमारे मोहल्ले में एक बुजुर्ग महिला कह रही थी 'यो अनूप ने कई हुज्यो, बुढापा में मति खराब वेईगी दिखे। बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम...' और भी न जाने किन किन उपमाओं से उनका बखान कर रही थी।

अच्छा पत्नियां रसोई के कार्य में सिद्धहस्त होती है, रसोई के कार्य करते करते इनको सब्जियां छीलने का अच्छा अभ्यास हो जाता है। यह हुनर हम गरीब पतियों पर अक्सर आजमाया जाता है। शब्दों के प्रहार से थोड़े थोड़े दिनों में छीलने का कार्यक्रम चलता रहता है। एक बार शब्द का प्रहार कर छीला, तो फिर थोड़े दिनों का इंतजार किया जायेगा, ताकि जख्म भर जाए। अभी जख्म पूरा भरा नहीं कि दूसरा शब्द का प्रहार किया जायेगा। इस तरह वो निरन्तर छीलता रहेंगा। निरन्तर शब्द प्रहार से यह अबोध अपनी सुध बुध खो देता है और पूरी तरह पत्नी नामक उस महान आत्मा के सामने आत्मसमर्पण कर देता है। फिर जिंदगीभर दुम हिलाना उसकी नियति बन जाता है।

अक्सर कहा जाता है कि शादी वो लड्डू है, जो खाये वो भी पछताएं। न खाये वो भी पछताएं, अधिकतर लोग यही सोचते हैं कि अगर पछताना ही है, तो खाकर ही क्यूं न पछताएं। इस तरह वो इस चक्रव्यूह में फंस जाते हैं। फिर जीवनभर लड्डू खाने का खामियाजा भुगतते रहते हैं।

अगर मैं अपनी बात करूं तो कभी कभी मुझे लगता है कि शादी करके मैं इस घर में आया हूं। अभी घर की सम्पूर्ण मालकिन तो वो है। हम तो सिर्फ प्यादे। एक कोने में पड़े रहते हैं। उठाओ तो उठ गए। बिठाओ तो बैठ गए। इसलिए प्यारे दोस्तो, पतियों...। जिंदगी तो ऐसे ही कटने वाली है। सुखी गृहस्थ जीवन का सार यही है। पत्नी की हर बात मानो, अपने ज्ञान का ढिंढोरा पत्नी के सामने मत पीटो, वो परम ज्ञानी है। आपकी पत्नी को ईश्वर ने आपके लिए बनाया है और आपको अपनी पत्नी के लिए और पत्नी ने आप ओर हम जैसे पतियों को निखट्टू से इंसान बना दिया ये क्या किसी चमत्कार से कम है। इसलिए समस्त पति लोग मस्त रहे, खुश रहे, अपना अस्तित्व बचा कर रखे। अपनी अपनी पत्नियों का पूर्ण सम्मान करें और सदा उनकी आज्ञा का पालन करें।

ललित सनाढ्य
साहित्यकार एवं व्यवसायी
नाथद्वारा 94604-44590

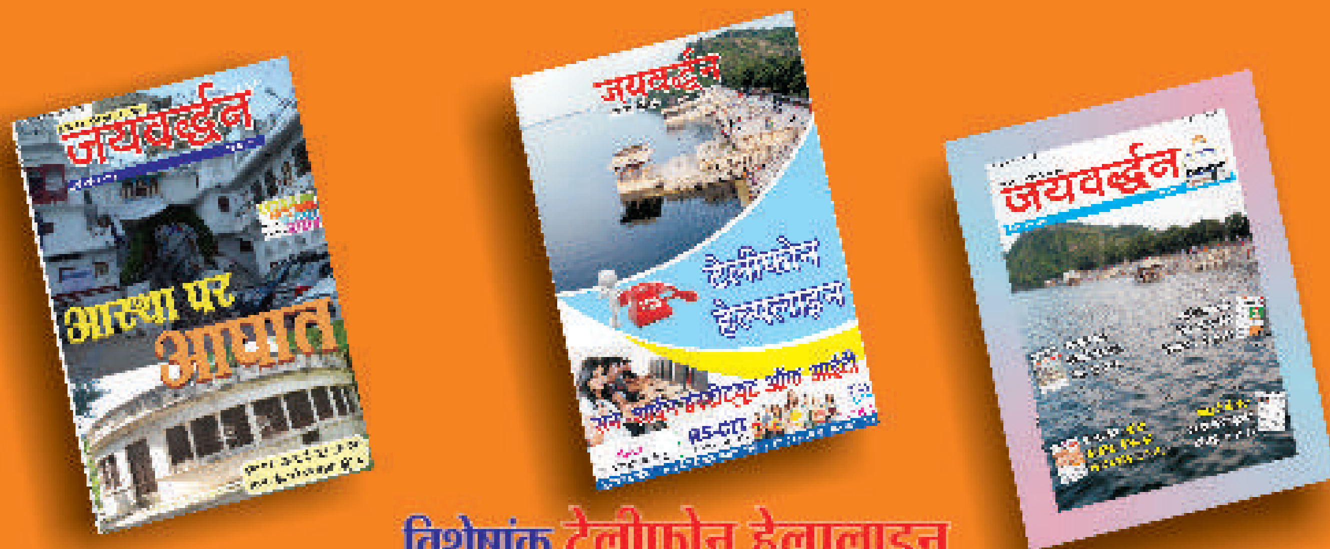

विशेषांक टैलीफोन हेलपलाइन

मात्र 50 रुपए में प्राप्त करें।

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती..

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	90	150 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

विशेष छूट के साथ मासिक पत्रिका की वार्षिक बुकिंग मात्र 150 रुपए में

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

फैमिली कोर्ट

नमस्कार जज अंकल, मैं ट्रेन में सीट पर सामान रख कर बैठा ही था कि सामने बैठी एक खूबसूरत व संभ्रांत घर की लगने वाली युवती ने मुझे प्यार व अपनत्व वाली आवाज में अभिवादन किया। मुझे आश्चर्य हुआ कि यह युवती कौन है और यह कैसे जानती है कि मैं जज हूं और साथ में अंकल का भी संबोधन? हो सकता है कि यह मेरे किसी भूतपूर्व कलीग जज की बेटी हो या फिर उसकी नजदीकी रिश्तेदार हो। मैं यह सब सोच ही रहा था कि उसने मुझे प्रश्नवाचक मुद्रा में देख कर मुस्कुरा कर कहा- जज अंकल, आप मुझे नहीं पहचानेंगे। मैं जब आप के कोर्ट में आई थी, तब मैं सिर्फ10 वर्ष की थी। उस समय आप सूर्यपुर में जिला फैमिली कोर्ट में जज थे। अरे यह तो बहुत वर्षों पुरानी बात है और मुझे रिटायर हुए भी 5 साल हो गए। किसी को भी इतनी पुरानी बातें कहां से याद आएंगी और मेरी कोर्ट में तो दिन में सैकड़ों लोग आते थे।

सबके बारे में कैसे कोई याद रख पाएगा? सोचते हुए मैं उसे अभी तक प्रश्नवाचक दृष्टि से देख रहा था और वह शायद समझ गई थी कि मैं उसे अभी तक पहचान नहीं पाया हूं। अंकल मैं अल्हड़ी, उस समय आपके कोर्ट में मेरे मम्मी पापा के तलाक का केस चल रहा था और उस केस की कार्यवाही के दौरान आपने एक दिन मुझसे पूछा था कि बेटा, तुम्हें किस के साथ रहना है? उसने मुझे याद कराया- वह आगे कुछ बोलती कि मेरे मुंह से अचानक निकला, अरे अल्हड़ी! इस लड़की व इस के मम्मी पापा केस को मैं कैसे भूल सकता हूं? रोज के झगड़े निबटाते निबटाते मुझे कई बार उकताहट भी होती थी, पर मेरी फैमिली कोर्ट में ड्यूटी के दौरान एक केस ऐसा भी आया था, जिसके परिणाम से मैं बहुत खुश था। इस केस का अंत आश्चर्यजनक व सुखद था। मैं तो क्या इस केस से संबंधित जो भी था, वह इस छोटी लड़की को कैसे भूल सकता है? अरे बेटा अल्हड़ी, तुम कैसी हो? तुम्हारे मम्मी पापा कैसे हैं? मुझे सच में उससे मिलकर खुशी हुई और ज्यादा खुशी तो उसे खुश देखकर हुई। मैं सच में जानना चाहता था कि क्या उसके मम्मी पापा अभी भी साथ रह रहे हैं? अंकल, मैं आपके कारण बहुत खुश हूं। मेरे मम्मी पापा तो एक दूसरे के बिना रह ही नहीं पाते। मैं इस साल सिविल सर्विस में चयनित हुई हूं और प्रशिक्षण के लिए शिमला जा रही हूं। आप उस दिन व्यक्तिगत रुचि नहीं लेते, तो शायद मैं भी सिंगल पेरेंट की प्रौब्लमैटिक चाइल्ड होती।

उसने मुझसे भावुक होकर कहा– नहीं बेटा, अगर उस दिन तुम कोर्ट में समझदार बच्ची की तरह नहीं बोलतीं, तो शायद तुम्हारे माता पिता जिंदगी की सच्चाई समझ नहीं पाते और अपने व्यक्तिगत अहम से जिंदगीभर का नुकसान कर लेते। बेटा, तुम सच में बहुत समझदार लड़की हो। मैंने अपनत्व से कहा।

मैं उस समय सूर्यपुर की फैमिली कोर्ट में जज था और उस दिन अल्हड़ी के माता पिता के तलाक का केस था। पति पत्नी को मैंने उनकी बच्ची सहित बुलाया था। दोनों ने आते ही शुरू से ही तलाक की मांग जोरदार तरीके से की, पर यह एक जिंदगीभर का फैसला था, जिससे कई सारी जिंदगियां जुड़ी हुई थीं। इसलिए मैंने उन्हें 1 महीने का विचारने का समय दिया था, पर वे लोग तलाक पर अड़िग थे। अब प्रश्न केवल यह था कि बच्ची किस के साथ रहेगी। मैं हमेशा यह प्रश्न बच्चों पर ही छोड़ता था। अल्हड़ी 10 साल की बच्ची थी। देखने में सुंदर और साथ में बहुत ही मासूम, उसका चेहरा बता रहा था कि वह कोर्ट में आने से पहले बहुत रोई होगी। वह गवाह के कठघरे में आई तो मैंने हमेशा की तरह उससे भी पूछा कि बेटा किसके साथ रहना चाहती हो? सामान्यतया बच्चा जिसके करीब होता है, उसके साथ रहने को कहता है, क्योंकि बच्चे को यह पता नहीं होता है कि क्या हो रहा है? उसने कुछ देर बाद बोलना शुरू किया, मेरा जन्म इन्हीं से हो, क्या यह मेरा फैसला था? यदि मेरे जन्म का फैसला मेरे हाथ में होता, तो मैं शायद ही इनके द्वारा जन्म लेती। मेरे जन्म के लिए ये लोग साथ रह सकते थे, तो पालने के समय ये लोग किस अधिकार से अलग हो सकते हैं?

जब मेरे जन्म का फैसला मेरे हाथ में नहीं था, तो पलने का फैसला मैं कैसे कर सकती हूं? जज अंकल, आप जो भी फैसला करें, वह मुझे मंजूर है। उसने अपने आंसू रोकते हुए बेबसी से कहा– एक छोटी सी बच्ची के मुंह से इतनी गंभीर बात सुनकर पूरे कोर्ट रूम में सन्नाटा छा गया। शायद मुझे जिंदगी में पहली बार पिनड्रौप साइलैंस का मतलब समझ में आ रहा था।

अचानक कोर्टरूम में जोर-जोर से हिचक- हिचक कर रोने की आवाज सुनाई दी। अल्हड़ी के माता- पिता दोनों जोर- जोर से रो रहे थे। मुझे तलाक नहीं चाहिए, जज साहब। मेरा पति भले ही दारू पिए, मुझे मारे या फिर बाहर गुलछर्रे उड़ाए। मैं उसके साथ रहने चली जाऊंगी। मेरे जीवन या मेरी भावनाओं से ज्यादा मेरी बेटी की जिंदगी जरूरी है। उसे अपने मां और पिता दोनों की छत्रछाया की जरूरत है। तलाक लेने पर अड़ने वाली उसकी मां यामिनी बोली– मुझे माफ कर दो। यामिनी! मैं बच्ची की कसम खाकर कहता हूं, अब मैं कभी दारू नहीं पिऊंगा। हाथ जोड़कर अपनी पत्नी से माफी मांगते हुए उसका पिता बोला– हद से ज्यादा क्रूर दिखने वाला व्यक्ति आज जैसे दया का पात्र लग रहा था। जज साहब, हम अपनी तलाक की अर्जी वापस लेते हैं। दोनों ने हाथ जोड़ कर मुझसे कहा– बहुत अच्छी बात है। बच्ची का सुखद भविष्य इसी में है। कोर्ट आशा रखती है कि आप लोग हमेशा साथ रहेंगे और एक दूसरे से अच्छा बर्ताव करेंगे। किसी ने सच ही कहा है कि बच्चे रेल की पटरियों को जोड़ने वाले स्लीपर की तरह होते हैं। मैंने खुशी जताते हुए मुकदमे के अंत पर मुहर लगाई। सच बताऊं मेरी जिंदगी में इतना दिलचस्प केस कोई और नहीं था। उस दिन सच में मेरी कोर्ट फैमिली कोर्ट लग रही थी, जहां एक फैमिली का मिलन हुआ था।

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

जितेन्द्र लढा
सुनिता लढा

जिले में ई-गवर्नेन्स सेवाओं हेतु राजस्थान सरकार द्वारा राज्यस्तर पर सम्मानित

विनय कम्प्यूटर्स

जिला परिषद के पास, 100 फीट रोड़, राजसमन्द

Mo. 9414677357
7737574175

Software/Web Development, Trademark, ISO, Digital Sign, GST/Firm registration, RIICO/Mining applications, Bulk massaging, FASTAG registration, Money transfer, Online payments, Bill payments, Recharges, Bus/Flight Ticket, Laptop/Desktop available.

CSC कॉमन सर्विस सेन्टर

E-GOVERNANCE SERVICES INDIA LIMITED

e-mitra

जिले में अधिकृत एकमात्र एक्सक्लुजिव डिस्ट्रीब्युटर

vodafone m-pesa

ग्राहक सेवा केन्द्र

SBI

जिला कार्यालय

आचार्य TECHNOLOGIES

राजस्थान सरकार द्वारा चयनित LSP

राजसमन्द जिले में कहीं भी ई-मित्र/बैंक बीसी/ RS-CIT सेन्टर लेने, m-pesa एजेन्ट बनने हेतु सम्पर्क करें।

विशेष ध्यान दे - कोई भी बिल जमा करवाने पर अथवा खाते में नकद जमा करवाने या निकासी पर तुरन्त कम्प्युटर प्रिन्टेड रसीद अवश्य प्राप्त करें।

अपनाये ! समय व ईंधन दोनों बचाये, साथ ही टोल में भी कैशबैक पायें!

अब बिना बैंक खाता-पाये एटीएम कार्ड तुरन्त

अपनाये केशलैस और हो जाये डिजीटल

- इस एटीएम कार्ड से कभी भी, कहीं भी भुगतान करें।
- किसी भी खाते में रुपये ट्रांसफर करें।
- सभी प्रकार के रिचार्ज स्वयं करें।
- रेल, बस, विमान, सिनेमा आदि के टिकिट बुक करें।
- सभी प्रकार के ऑनलाईन भुगतान करें।
- टोल/पेट्रोल पम्प पर भुगतान करें।
- किसी भी दुकान पर भुगतान करें।
- मात्र 2 सेकण्ड में, बहुत ही आसानी से साथ ही पाये, आकर्षक ऑफर्स हर भुगतान पर।

क्या आपने कभी सोचा हैं?

आपके पेम्पलेट को कितने लोग पढ़ते हैं?

कितने सड़क पर बिखरे रहते हैं?

पेम्पलेट

छपवाने की अब जरूरत नहीं।

क्योंकि पेम्पलेट के खर्च में ही

जयवर्द्धन मासिक पत्रिका

में अपने प्रतिष्ठान का

आप विज्ञापन लगा सकते हैं

सम्पर्क करें 9414239648

शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर

सभी तरह की खेलकूद सामग्री

मिलने का एकमात्र स्थान

जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली

जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

An ISO -9001:2015

M. 9829445469, 9929495228

शाईन कम्प्यूटर्स

RKCL

IT shapes future

(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

C.F.A (Tally)

पूर्ण व्यवसायिक कोर्स

GST/Tally ERP

SHiNE

RS-CIT | Tally पूर्ण व्यवसायिक कोर्स | DCA | PGDCA | PDCA | Spoken English

राजसमन्द का नं. 1 कम्प्यूटर संस्थान

शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469

शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

अखिराज
राजपूती परिधान
कम दाम में
आकर्षक वैरायटी
कॉटन सूट, सेमी सूट, गार्डन
कपड़े, गार्डन वेरेली,
विसकोष, पेचवर्क के सूट, कॉटन
साफे, राजाशाही, गजशाही,
हलरीया बन्देज के साफे, प्योर की
पौशाकें, कॉटन जोड़ बन्धेज,
शेडेड जोड़ वर्क वाले जोड़, एच.पी.
इत्यादि वैरायटी उपलब्ध हैं।
राजसमन्द में सबसे बड़ा शोरूम यहां
रजवाड़ी कपड़ों की सभी वैरायटी उपलब्ध
पार्किंग
सुविधा
उपलब्ध
रेल्वे स्टेशन रोड, राडाजी बावजी के पास, कांकरोली
मो. 9610500526, 9784781404

राजस्थान पत्रिका,
दैनिक भास्कर के साथ सभी
अखबारों में विज्ञापन
प्रकाशित कराने का एकमात्र स्थान
शक्ति
एडवरटाइजिंग

सभी
प्रकार की
खेलकूद
सामग्री
मिलने का
राजसमंद
में एकमात्र स्थान

शक्ति स्पोर्ट्स

शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद)
94142-39648, 94144-73275

जयवर्द्धन
की
वार्षिक
बुकिंग
मात्र
150
रुपए में

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से
आप जयवर्द्धन
मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं
वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - कमल शेख, 94147-86464
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
कुंभलगढ़ - देवीसिंह मो. 8003124089
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी

होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा,
मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।

दिलीप जैन

मो. 9214384205 9602997715

जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज
रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर

राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

जयवर्द्धन की मतदाताओं से अपील

कुछ लोग यह सोचकर अपना वोट डालने नहीं जाते कि मेरे 1 वोट से क्या होने वाला है। तो जरा इन बातों पर ध्यान दें

1. वर्ष 2008 में राजस्थान के नाथद्वारा विधानसभा सीट से डॉ. सीपी जोशी मात्र 1 वोट से चुनाव हार गए थे। मजे की बात यह है कि उनके ड्राइवर को वोट देने का समय भी नहीं मिला था।
2. 1023 में मात्र 1 वोट ज्यादा मिलने से हिटलर नाजी पार्टी का प्रमुख बना और हिटलर युग की शुरुआत हुई।
3. 1998 में मात्र 1 वोट से अटल बिहारी वाजपेयी सरकार गिर गई थी।
4. 1917 में अहमदाबाद में म्युनिसीपल कॉर्पोरेशन का चुनाव सरदार पटेल मात्र 1 वोट से हार गए थे।
5. 1776 में मात्र 1 वोट ज्यादा मिलने से अमेरिका में जर्मन की बजाय अंग्रेजी राजभाषा बनी।
6. 1875 में मात्र 1 वोट से फ्रांस में राजतंत्र से गणतंत्र आया।

इसलिए अपने अमूल्य 1 वोट की कीमत समझें

तथा 7 दिसम्बर 2018 को एक अच्छी सरकार और एक अच्छे जनप्रतिनिधि को चुनने के लिए अपने वोट का प्रयोग अवश्य करें।

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To